॥ तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ॥

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

वर्ष - 21 अंक - 2 अप्रैल-जून 2026

अहिल्या जयन्ती पर पूजा अर्चना करते हुए

अहिल्या जयन्ती पर यज्ञ करते हुए

प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक 21 मार्च 2026

बागेश्वर धाम को गौतम आश्रम द्वारा अभिनन्दन पत्र

प्रकाशक :
श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति, पुष्कर, अजमेर (राज.)

प्रबन्ध समिति भारतीय विद्या मन्दिर, पाली द्वारा संचालित

कृष्णा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं इंजीनियरिंग

(पॉलिटेक्निक कॉलेज)

त्रिवर्षीय इंजीनियरिंग डिप्लोमा

सिविल | मैकेनिकल | इलेक्ट्रीकल

प्रवेश योग्यता : प्रथम वर्ष : कक्षा 10 वीं उत्तीर्ण द्वितीय वर्ष : कक्षा 12 वीं (विज्ञान-गणित अथवा द्विवर्षीय आई. टी. आई)

भारतीय विद्या मन्दिर महिला बी.एड.कॉलेज,पाली

रामदेव बी. एड़. कॉलेज, जैसलमेर

भारतीय विद्या मन्दिर बी.एस.टी.सी.कॉलेज, पाली

कृष्णा प्रा. आई. टी. आई.

चिमनपुरा, पाली (राज.) फोन : 02932 258441 मो. 92144 91774, 97841 98474

मारवाड़ प्रा.आई. टी. आई., मारवाड़ ज.

ट्रेड : इलेक्ट्रिशियन, वायरमैन, डिजल मैकेनिक, अवधि 2 वर्ष, प्रवेश योग्यता 10 वीं उत्तीर्ण

भारतीय विद्या मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतीय विद्यापीठ माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतेन्दु कॉलेज, पाली मारवाड़

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान शिक्षा विभाग भारत सरकार (NIOS) द्वारा संचालित 10 वीं एवं 12 वीं उत्तीर्ण करें।

मान्य विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम से बी. ए., बी. कॉम,एम. ए, एम. कॉम, एम. ए. (एज्यूकेशन) उत्तीर्ण करे।

गोरधन जोशी
प्रबन्ध निदेशक
87693 19941

सुनील जोशी
सचिव
92144 91774

हेमन्त जोशी
निदेशक
92143 76663

शुभम जोशी
उपाध्यक्ष
90010 81912

शिवम जोशी
समन्वयक
97841 98474

सीताराम जोशी
अध्यक्ष
98757 26002

कृष्णा कॉलेज, राम नगर, पाली

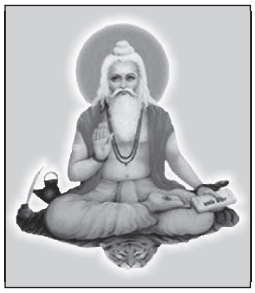

।। तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ।।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

आश्रम दूरभाष : 0145-2772112,

व्हाटसेप नं. 9352796455

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति का त्रैमासिक मुखपत्र

(सदस्यों में निःशुल्क प्रसारण)

वर्ष - 21 अंक - 2 अप्रैल - जून 2026

E-mail : gautamashrampushkar@gmail.com Web : www.gautamashrampushkar.com

संरक्षक :
मोहन राज उपाध्याय
लाम्पोलाई
9414119195
7665019195

परामर्श :
हनुमान प्रसाद शर्मा
अजमेर
9414556343

प्रम्बधन :
वी. पी. शर्मा
अजमेर
9414556553

सम्पादक :
शिवराज चाष्टा
अजमेर
9414284277

सह-सम्पादक :
देवराज शर्मा
पाली
9461717418

उप-सम्पादक :
सन्दीप जोशी
अजमेर
9251477334
9001195241

सम्पादकीय.....

सम्मानित ट्रस्टीगण तथा समाज बन्धु

सादर वन्देमातरम

श्री पुष्कर गौतमाश्रम संवाद पत्रिका का इक्कीसवें वर्ष का यह द्वितीय अंक आप सभी ट्रस्टीगण तथा समाज के पाठक बन्धुओं के अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। अंक में चैत्र मास के विशेष आयोजन नववर्ष समारोह एवं महर्षि गौतम जयन्ती तथा दो दिन पश्चात ही प्रथम बार माता अहिल्या जयन्ती के आयोजनों ने गौतमाश्रम के कार्य कलापों को यादगार बना दिया है।

इस अवधि में द्वितीय शिव पाटोत्सव, ज्योतिष कर्मकांड की कक्षाओं तथा कथा के माध्यम से गौतमाश्रम को जीवन्त स्वरूप प्रदान किया गया। एक विशेष उपलब्धि इस अवधि में और रही, वह है हमारे संरक्षक और पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम जी जोशी को गौतम जयन्ती के अवसर पर इन्दौर समाज द्वारा महर्षि गौतम गौरव सम्मान से विभूषित किया गया।

आगामी अवधि में आने वाले पर्वो की हार्दिक शुभकामना।

जय महर्षि गौतम,

भवदीय
शिवराज चाष्टा
सम्पादक

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	- 1
गौतमाश्रम समाचार	- 2
द्विवार्षिक शिव पाटोत्सव	- 9
श्री सीताराम जी जोशी को सम्मान	- 10
साधारण सभा बैठक-16/1/26	- 11
प्रबधन्कारिणी समिति बैठक-17/1/26	- 15
प्रबधन्कारिणी समिति बैठक-21/3/26	- 17
आओं वेदों की ओर चलें	- 22
गीता चिन्तन	- 23
कर्म की महिमा-राम क्यों राम हुए	- 24
एक प्रेरक कहानी-पड़ोसी	- 26
पौराणिक कथा	- 27
सिंहासन बत्तीसी	- 28
पंचतंत्र से - प्रेरक कहानी	- 29
देश प्रदेश से प्राप्त समाचार	- 30

गौतमाश्रम समाचार.....

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की माह जनवरी 2026 से मार्च 2026 की तीन माह अवधि की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ न्यासी महानुभावों तथा समाज बन्धुओं की सूचनार्थ निम्न प्रकार है-

1. इन तीन महिनों की अवधि में कुल 4278 यात्रियों को आवासीय सुविधायें प्रदान की गई इसमें 55 यात्री बसों के यात्री भी सम्मलित हैं। इन 4278 यात्रियों में से 1009 यात्री हमारे समाज बन्धु थे एवं शेष 3269 अन्य समाज के थे। इन तीन महीनों की अवधि में 07 शादी समारोह, प्रबन्ध कारिणी समिति की मीटिंग एवं आम सभा का आयोजन हुआ इससे आश्रम को 19,87,750/-की आय प्राप्त हुई है।

2. उपरोक्त अवधि में समाज बन्धुओं की ओर से विभिन्न मदों में 2,53,012/- रुपये की राशि आश्रम विकास एवं भेंट सहयोग स्वरूप प्राप्त हुई है। इसमें 1000 व उससे ऊपर की राशि प्रदाताओं का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं	दानदाता	निवास	राशि	मद
1	श्री मनोज शंकर जी शर्मा	अजमेर	100000/-	आश्रम धुव कोष
2	श्री राकेश जी उपाध्याय	बिजयनगर	15100/-	आश्रम विकास कोष
3	श्री संजय जी त्रिपाठी	मुम्बई	11000/-	कार्तिक पूर्णिमा सहयोग
4	श्री गौतम शर्मा जी	गुवाहाटी	5100/-	हनुमंत कथा सहयोग
5	श्री रमेश शर्मा जी	ब्यावर	2100/-	पाटोत्सव सहयोग
6	श्री बालकृष्ण शर्मा जी	जूनियाँ	2100/-	पाटोत्सव सहयोग
7	श्री ओम प्रकाश जी दुबे	अजमेर	1300/-	भेंट सहयोग
8	श्री प्रकाश चंद्र पंचारिया जी	शोलापुर	1100/-	भेंट सहयोग
9	श्री राजेन्द्र जोशी जी	फलौदी	1100/-	भेंट सहयोग
10	श्री विजयकुमार, मुन्नालाल उपाध्याय जी	डीडवाना	1100/-	भेंट सहयोग
11	श्री अविनाश गौतम जी	पुष्कर	1100/-	भेंट सहयोग
12	श्री राजेश मिश्रा जी	फागी	1100/-	भेंट सहयोग
13	श्री हरिशंकर गौतम जी	फागी	1100/-	भेंट सहयोग
14	श्री राजेन्द्र प्रसाद जी चौबे	अजमेर	1000/-	हनुमंत कथा सहयोग
15	श्री वेंक्टेश्वर प्रसाद शर्मा जी	अजमेर	1100/-	उत्सव सहयोग

3. श्री पुष्कर गौतम आश्रम की अनुपम योजना ''अन्नक्षेत्र स्थाई कोष'' के अन्तर्गत दिसम्बर 2025 तक 474 समाज बन्धुओं ने इस योजना से जुडकर प्रत्येक ने दस हजार रूपये की राशि स्थाई कोष में जमा कराकर अपने पूर्वजों की पुण्य तिथि व अन्य उपलक्ष में प्रतिवर्ष नियत तिथि पर छात्रावासी विप्र बटुकों के भोजन के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किये जाने अथवा स्मरण किये जाने हेतु इस योजना में भाग लिया है। जनवरी 2026 से मार्च 2026 की अवधि में 04 और समाज बन्धुओं ने इस योजना में भाग लिया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

अन्नक्षेत्र स्थाई कोष में जुड़ने वाले सहभागी

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1.	श्री तरूण शर्मा	चितौडगढ़	स्व. श्री ओमप्रकाश जी शर्मा	भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा
1	श्री सत्यप्रकाश पंचारिया	चैन्नई	स्व श्रीमती मोहनी देवी पत्नी मोहनलाल जी पंचारिया	माघकष्ण चर्तुदशी

2	श्री कीर्ति कुमार जी, श्री कैलाश जी शर्मा	रतलाम	स्व. श्रीमती गीता देवी पत्नी स्व. श्री कृष्णकान्त जी शर्मा	चैत्र शुक्ल रामनवमी
3	श्री सत्यप्रकाश जी त्रिवेदी	उदयपुर	स्व. श्री सोहनलाल जी पुत्र स्व. हरिशंकर त्रिवेदी जी	फाल्गुन कृष्ण दशमी
4	श्री भीमाशंकर जी उपाध्याय	मुम्बई	स्व. श्रीमती संतोष पत्नी श्री भीमाशंकर जी उपाध्याय	पौष कृष्ण एकादशी

4. उपरोक्त योजना के अन्तर्गत समाज बन्धुओं की ओर से बताई गई तिथि पर उनके प्रियजनों की स्मृति में गौतमाश्रम द्वारा छात्रावासी विप्र बटुकों को भोजन कराकर श्रद्धासुमन अर्पित किये जाते रहे हैं। जनवरी 2026 से मार्च 2026 में आने वाली पुण्य तिथियों एवं जन्म उत्सव पर जिनका पुण्य स्मरण किया गया उनका पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है :-

जनवरी माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्रीमती मनोरमा पत्नी सुभाष जी जोशी	इन्दौर	स्व. श्रीमती लाली बाई जोशी	पौष शुक्ल त्रयोदशी
2	श्रीमती तारामणि सिंवाल पत्नी शिव दयाल जी	खुनखुना	स्व. श्रीमती सुगनी देवी तिवाड़ी (माताजी)	पौष शुक्ल त्रयोदशी
3	श्री सुरेश जी सुभाष जी महेश जी उपाध्याय	कुचामन सिटी	स्व. श्री देवी दत्त जी उपाध्याय	पौष शुक्ल त्रयोदशी
4	डा. राधेश्याम नारायणदास जी जोशी	अमरावती	स्व. नारायणदास जी जोशी	पौष शुक्ल त्रयोदशी
5	श्री गंगाधर जी उपाध्याय	सीकर	स्व. श्रीमती नर्मदा देवी	पौष शुक्ल चतुर्दशी
6	श्रीमती पुष्पा उपाध्याय	कर्नाटक	स्व. श्री श्रीवल्लभ जी पंचारिया पुत्र श्री किशनलाल जी पंचारिया	पौष शुक्ल चतुर्दशी
7	श्री कैलाशचन्द्र जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. इन्द्रराज जी	पौष शुक्ल पूर्णिमा
8	श्री नंद किशोर जी तिवाड़ी	अजमेर	स्व. श्रीमती कमला देवी	माघ कृष्ण प्रतिपदा
9	श्री राजेन्द्र जी, देवेन्द्र जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती प्रेम देवी उपाध्याय	माघ कृष्ण द्वितीया
10	श्री हेमन्त कुमार जी, दीपक कुमार जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्री मुरलीधर जी उपाध्याय	माघ कृष्ण द्वितीया
11	श्री धनश्याम जी गोविन्द जी सुशील जी प्रदीप जी स्नेह उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. रामनिवास जी उपाध्याय	माघ कृष्ण तृतीया
12	श्री सत्य प्रकाश जी शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्रीमती चंचल शर्मा	माघ कृष्ण तृतीया
13	श्री सत्यनारायण जी जोशी पुत्र बृजलाल जी जोशी	चुरू	श्री मंयक जोशी पुत्र श्री रविशंकर जी के जन्म उत्सव पर भेंट	माघ कृष्ण पंचमी
14	श्री नरेश जी शर्मा सम्पादक गांव री खबरां	फतेहनगर (उदयपुर)	स्व. श्री फतेहलाल जी शर्मा	माघ कृष्ण सप्तमी
15	श्री देवेन्द्र कुमार जी चाष्टा	इन्दौर	स्व. श्रीमती मंजू देवी	माघ कृष्ण अष्टमी

16	श्री शिवदयाल जी सिंवाल	खुनखुना हाल (मुम्बई)	स्व. श्रीमती आशा देवी सिंवाल	माघ कृष्ण नवमी
17	श्रीमती गोदावरी बाई भारद्वाज	भीलवाड़ा	स्व. श्री पुष्प कान्त जी शर्मा	माघ कृष्ण एकादशी
18	श्रीमती विजयलक्ष्मी उपाध्याय	जयपुर	स्व. श्री सुरेश चन्द्र जी उपाध्याय	माघ कृष्ण एकादशी
19	श्रीमती सुमन व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्रीमती चन्द्र कान्ता जी जोशी	माघ कृष्ण एकादशी
20	श्री रामेश्वर लाल जी पंचारिया	लाम्पोलाई (हाल मु बैंगलोर)	स्व. श्री राजेश कुमार जी	माघ कृष्ण द्वादशी
21	श्री जुगल किशोर जी, सत्यनारायण जी, मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्रीमती सरजू देवी उपाध्याय	माघ कृष्ण द्वादशी
22	श्री अनिल कुमार जी जोशी	अजमेर	स्व. श्री जगदीश चन्द्र जी जोशी	माघ कृष्ण त्रयोदशी
23	श्री मयूर गणेश जी गील	संगमनेर	स्व. श्रीमती संतोष बसंत जी गील	माघ कृष्ण अमावस्या
24	श्रीमती शान्ति देवी पत्नी श्री ईश्वर लाल जी जोशी	पाली	स्व. श्री ईश्वरलाल जी जोशी	माघ शुक्ल द्वितीया
25	डा. कैलाश चन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. हकीमसाब श्री रामचन्द्र जी त्रिपाठी	माघ शुक्ल द्वितीया
26	श्री घीसूलाल जी तिवाड़ी	बगडीनगर हाल-अचरानक्कम	स्व. श्रीमती प्यारी बाई	माघ शुक्ल पंचमी
27	श्रीमती आशा चतुर्वेदी (संजय जी चतुर्वेदी)	ग्वालियर	स्व. श्री रामस्वरूप जी चतुर्वेदी	माघ शुक्ल नवमी
28	श्री मनोज कुमार जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्री सत्यनारायण जी शर्मा	माघ शुक्ल दशमी
29	श्री सुरेश कुमार भोलाराम जी व्यास	वाशिम महाराष्ट्र	स्व. भोलाराम जी वंशीलाल जी व्यास	माघ शुक्ल दशमी
30	श्रीमती गंगा देवी व्यास	मुम्बई	स्व श्री रामदत जी व्यास	माघ शुक्ल द्वादशी
31	श्री श्यामसुंदर जी व्यास	मूंडवा (नागौर)	स्व. श्रीमती राधा देवी व्यास	माघ शुक्ल द्वादशी

फरवरी माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

1	श्री रतनलाल जी जाजड़ा	जोधपुर	स्व. श्री मोहनलाल जी जाजडा	माघ शुक्ल चतुर्दशी
2	श्री मूलचंद जी, बंकटलाल जी, रामनिवास जी पंचारीया	लाम्पोलाई	स्व. श्री भोलाराम जी पंचारिया	माघ शुक्ल चतुर्दशी
3	श्री शिवरतन जी, श्रीमती गीता देवी तिवाड़ी	उदयपुर	स्व. श्री रामचंद्र जी उपाध्याय	माघ शुक्ल पूर्णिमा
4	श्री बृजमोहन जी, मोतीलाल जी जोशी	इंदौर	स्व. सरजू बाई	माघ शुक्ल पूर्णिमा
5	श्री जे.पी. त्रिवेदी जी	सिकन्दराबाद	स्व. श्रीमती मोहनी बाई त्रिवेदी	माघ शुक्ल पूर्णिमा
6	श्री विकास जी जोशी	बडौदरा	स्व. श्रीमती सरला देवी जोशी	माघ शुक्ल पूर्णिमा

7	श्री धनराज जी, सत्यनारायण जी सिंवाल	खुनखुना	स्व. श्रीमती नानी देवी पत्नी श्री लादू राम जी	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा
8	श्री कैलाशचन्द्र जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्रीमती मोहनी बाई	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया
9	श्री बालकृष्ण जी शर्मा	जूनियाँ (अजमेर)	स्व. श्रीमती कमला शर्मा	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया
10	श्री मदनलाल जी शर्मा श्रीमती शोभा शर्मा	अजमेर	स्व. श्री किस्तूर चंद जी जोशी	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी
11	श्रीमती सुशीला देवी बालकृष्ण जी	जोधपुर	जन्मोत्सव पर	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी
12	श्रीमती सोहनी देवी	जोधपुर	स्व. श्री दाउलाल जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्ण पंचमी
13	श्रीमती मंजू प्रभा जोशी पत्नी श्री कैलाश चन्द जी जोशी	अजमेर	स्व. श्री हनुमान दत्त जी जोशी	फाल्गुन कृष्ण पंचमी
14	श्री पुरुषोतम जी सिंवाल	सिलणवाद	स्व. श्रीमती इन्दु बाई	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी
15	डॉ. श्री जगदीष प्रसाद जी शर्मा	चैता-बूंदी	स्व. श्री लक्ष्मीनारायण जी दुबे	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी
16	श्री तिलोक चंद जी उपाध्याय लक्ष्मी नारायण जी	लाम्पोलाई	स्व. श्री सत्यनारायण जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी
17	श्रीमती कामिनी पत्नी श्री हेमेन्द्र जी उपाध्याय	अजमेर	स्व. श्री ब्रह्मदत्त जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्णा अष्टमी
18	श्री प्रहलाद जी रामनाथ जी शर्मा	पंचमहल दाहोद (गुजरात)	स्व. श्रीमती मूली देवी	फाल्गुन कृष्ण नवमी
19	श्री हरिमोहन जी शर्मा	बूंदी	श्रीमती कल्याणी देवी पत्नी स्व. गुलाब शंकर जी	फाल्गुन कृष्ण नवमी
20	श्री हरि प्रसाद जी शास्त्री दिनेश जी शर्मा	इंदौर	स्व. श्री लक्ष्मी दत्त जी शास्त्री स्व. श्रीमती मोहनी देवी	फाल्गुन कृष्ण नवमी
21	श्री सुमित जी त्रिवेदी पुत्र श्री जे.पी त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव (पुत्र)	प्रतिवर्ष 12 फरवरी
22	श्रीमती शैलजा देवी	अजमेर	स्व. श्री इन्द्रदेव जी चाष्टा	फाल्गुन कृष्ण एकादशी
23	श्रीमती ललितेश जी व्यास	अजमेर	स्व. श्रीमती चाँद बाई	फाल्गुन कृष्ण एकादशी
24	श्री नरेश चंद जी पुत्र श्री मुरलीधर जी व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्रीमती जानकी देवी	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी
25	श्री सत्यनारायण जी शर्मा	रतलाम	स्व. श्रीमती वीणा जोशी	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी
26	श्री प्रकाश जी पंचारिया	सोलापुर	स्व. श्री जवाहर लाल जी गणेश जी पंचारिया	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी
27	श्री विष्णु दत जी गील	अजमेर	स्व. श्री रामेश्वर जी गील	फाल्गुन कृष्ण अमावस्या
28	श्री नरेन्द्र कुमार जी पंचोली	इंदौर	स्व. श्री मनोहर लाल जी पंचोली	फाल्गुन कृष्ण अमावस्या
29	श्री श्याम सुन्दर जी सुल्तानियॉ	शाहपुरा (भीलवाडा)	स्व. श्री भंवर लाल जी सुल्तानियॉ	फाल्गुन कृष्ण अमावस्या

30	श्री राजेन्द्र जी पुत्र श्री राधाकृष्ण जी व्यास	अजमेर	स्व. श्रीमती संतोष देवी	फाल्गुन शुक्ल तृतीया
31	श्री ओमप्रकाश जी तिवाडी (चन्द्रतारा)	सोलापुर	स्व. श्री घासीराम जी रामस्वरूप जी तिवाडी	फाल्गुन शुक्ल तृतीया
32	श्री ज्ञानदत जी तिवाडी	दिल्ली	स्व. श्री रामदत जी तिवाडी	फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी
33	श्री सतीश जी विनोद जी अजय जी उपाध्याय	न्यु मुम्बई व आकोला	स्व. श्रीमती निर्मला देवी	फाल्गुन शुक्ल पंचमी
34	श्री नैवेद्य जी चाष्टा गुरु	इंदौर	स्व. श्रीमती ज्योत्सना शर्मा पत्नी पुरुषोतम जी शर्मा	फाल्गुन शुक्ल सप्तमी
35	श्री श्याम सुन्दर जी व्यास	मून्डवा (नागौर)	स्व. श्री पं. जुगलकिशोर जी व्यास	फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
36	श्री पंकज जी, मांगीलाल जी उपाध्याय	बडौदा	स्व. श्री सूरज करण जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
37	श्री विजय कुमार जी लूणकरण जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्री हरि लूणकरण जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल नवमी
38	श्री मुरलीधर जी ओमप्रकाश जी द्विवेदी (सांखी)	सोलापुर	स्व. श्री बद्रीनारायण जी रामकिशोर जी द्विवेदी	फाल्गुन शुक्ल दशमी
39	श्री ओमप्रकाश जी जोशी	जोधपुर	स्व. श्री शिवकुमार जी जोशी	फाल्गुन शुक्ल दशमी
40	श्रीमती राधा देवी पत्नी स्व. श्री गोपी किशन जी	ग्वालियर	स्व. गोपी किशन जी तिवाड़ी	फाल्गुन शुक्ल दशमी
41	श्री यशेश जी उपाध्याय	मंगलम सीटी रतलाम	स्व. श्री योगेन्द्र जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल एकादशी

मार्च माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

1	श्री जगननिवास जी पंचारिया	मुम्बई	स्व. श्रीमती रतन बाई पत्नी किशन लाल जी	फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी
2	श्री रामस्वरुप जी पंचारिया	अहमदाबाद	स्व. श्रीमती देवकी बाई पंचारिया	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
3	श्री जुगल किशोर जी, सत्यनारायण जी, मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्री चतुर्भुज जी उपाध्याय	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
4	श्री शरद जी बाला प्रसाद जी तिवाडी	पूना	स्व. श्री बाला प्रसाद जी तिवाड़ी	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
5	श्रीमती सुशीला देवी शर्मा	जोधपुर	स्व. श्री बालकिशन जी पंचोली	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
6	श्री तिलोक चन्द जी, श्री सत्यनारायण जी उपाध्याय	लाम्पोलाई (नागौर)	स्व. श्रीमती रेणु देवी उपाध्याय पत्नी श्री त्रिलोक चन्द जी उपाध्याय	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा
7	श्री प्रेमनारायण जी नाथूलाल जी व्यास	इंदौर	स्व. श्री नाथूलाल जी सीताराम जी व्यास	चैत्र कृष्ण द्वितीया
8	श्री कैलाशचन्द जी त्रिपाठी	कोठियां (अजमेर)	स्व. श्रीमती उमा जोशी	चैत्र कृष्ण तृतीया

9	श्री संजय कुमार विजय कुमार जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी पत्नी श्री लूणकरण जी उपाध्याय	चैत्र कृष्ण चतुर्थी
10	श्रीमती ललिता देवी शर्मा, रोहित जी चाष्टा	अजमेर	स्व. श्री रवीन्द्र प्रकाश जी चाष्टा	चैत्र कृष्ण चतुर्थी
11	श्रीमती कमला देवी शर्मा पत्नी स्व. श्री सुन्दर लाल जी भुवालिया	देवली	जन्मोत्सव	चैत्र कृष्ण पंचमी
12	श्री सतीश जी, गिरीश जी जोशी	अष्टी महा.(नगर)	स्व. श्री विट्ठलदास जी उदेराम जी जोशी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
13	श्री संदीप जी चौबे पुत्र श्री मिट्ठूलाल जी	भीलवाडा	स्व. श्रीमती सुशीला देवी चौबे	चैत्र कृष्ण अष्टमी
14	श्री के.सी शर्मा जी	भोपाल	स्व. श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
15	श्री कैलाशचन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
16	श्री धरनीधर जी तिवाड़ी पुत्र प्रशान्त, निशान्त	उदयपुर	स्व. श्रीमती मूली बाई पत्नी श्री मोती लाल जी तिवाड़ी	चैत्र कृष्ण दशमी
17	श्रीमती संतोष देवी पत्नी श्री राधेश्याम जी शर्मा	राजसमन्द	जन्म दिवस के उपलक्ष में	चैत्र कृष्ण दशमी
18	श्रीमती राधा मोहन जी शर्मा	बूंदी	स्व. श्री गोपीलाल जी शर्मा एवं श्रीमती गंगा देवी	चैत्र कृष्ण एकादशी
19	श्रीमती कृष्णा शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्रीमती शान्ता देवी शर्मा	चैत्र कृष्ण अमावस्या
20	श्री ओमप्रकाश जी पंचोली	रतलाम	सर्वपितर	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या
21	श्री लोकेश जी उपाध्याय	भीलवाडा	सर्वपितर	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या
22	श्री बालाप्रसाद पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्रीमती पार्वती बाई	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
23	श्री संतोष जी, अशोक जी, गोपी जी कलवाडिया	सुजानगढ़	श्री लखमीचंद कमला देवी की प्रेरणा से	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
24	श्री विद्याधर जी चौबे	पुर –भीलवाड़ा	स्वेच्छा से	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
25	श्री कृष्णवल्लभ जी शर्मा	ब्यावर	माताजी श्रीमती पार्वती देवी शर्मा	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
26	श्री सत्यनारायण जी भट्ट	भीलवाडा	स्व. श्रीमती गंगा बाई	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
27	श्री सतीश जी, विनोद जी उपाध्याय	आकोला	श्री मनीष कुमार जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल द्वितीया
28	श्री कैलाश जी महेश जी स्व. योगेश जी, लोकेश जी आचार्य	उदयपुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी आचार्य	चैत्र शुक्ल द्वितीया
29	श्री अक्षय जी शर्मा	(गुंदोज) सिरोही	स्व श्री डा0 बाबूलाल जी शर्मा	चैत्र शुक्ल द्वितीया
30	श्री रविकान्त जी व्यास	भीलवाडा	नवजात पुत्र	चैत्र शुक्ल तृतीया
31	श्रीमती सीता देवी शर्मा उपाध्याय	नाथद्वारा	स्व. श्री रामनिवास जी झाडोलिया उपाध्याय	चैत्र शुक्ल चतुर्थी

32	श्री मदनलाल जी उपाध्याय	औरंगाबाद	स्व. श्री अनिल कुमार, रामगोपाल जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल षष्ठी
33	श्री सत्यनारायण जी पंचारिया	खीनच जोधपुर	स्व. श्रीमती कमला देवी पत्नी आशकरण जी	चैत्र शुक्ल षष्ठी
34	श्री वेंक्टेश्वर प्रसाद जी, कैलाश चंद जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्रीमती गुलाब देवी पत्नी श्री रामचंद्र जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल सप्तमी
35	श्रीमती लता बालकृष्ण जी आचार्य	भोपाल	स्व. श्रीमती कुसुमलता प्रहलाद जी (चौधरी)	चैत्र शुक्ल सप्तमी
36	श्री गौतम जी शर्मा त्रिवेदी	हैदराबाद	स्व. श्री घेवरचन्द जी शंकर लाल जी त्रिवेदी	चैत्र शुक्ल सप्तमी
37	श्री ओमप्रकाश जी अशोक कुमार जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्रीमती फूला बाई दगडू सेठ	चैत्र शुक्ल अष्टमी
38	श्रीमती रमा देवी उपाध्याय	भीलवाडा	स्व. सतीश कुमार जी बच्छ	चैत्र शुक्ल अष्टमी
39	श्री बद्रीनारायण जी शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्री रघुनाथ जी शर्मा	चैत्र शुक्ल दशमी
40	श्री सुशील जी शर्मा	चितौड़	स्व. श्री देवी दत जी शर्मा	चैत्र शुक्ल दशमी
41	श्री दामोदर जी पुरुषोतम जी उपाध्याय	आकोला	स्व. श्री रामस्वरुप जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल एकादशी
42	श्री हनुमान प्रसाद जी पुत्र श्री गोपाल प्रसाद जी शर्मा	मालपुरा (टोंक)	स्व. श्रीमती दुर्गा देवी पत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
43	श्री जीवन प्रकाश जी पुत्र श्री बद्रीनारायण जी त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव (स्वयं)	प्रतिवर्ष 27 मार्च
44	श्री मुदित त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव	प्रतिवर्ष 30 मार्च

''धन की दौड़ में खोया सुख''

लोग जीवन को सुखी बनाने के लिए धन कमाने के विविध प्रयोजन करते हैं। इस फेरे में अपना सुख और शांति खो बैठते हैं।

वे साधन को साध्य बना लेते हैं। वे विचार नहीं कर पाते कि धन शरीर के लिए है न कि शरीर धन के लिए। इस अंधी दौड़ में मनुष्य परिवार, स्वास्थ्य और आत्मिक सुख को भी भूल जाता है।

धन तो केवल जीवन को सुविधाजनक बनाने का माध्यम है, पर जब वह जीवन का लक्ष्य बन जाए तो वह विष बन जाता है।

सच्चा सुख तो संतुलन में है - जहां धन की आवश्यकता पूरी हो, पर लालच हावी न हो।

हमारे ऋषि-मुनि सदियों से यही संदेश दे रहे हैं कि संतोष ही सबसे बड़ा धन है। जब हम विचारों को सही दिशा देते हैं, तभी जीवन एक सुंदर माला बन पाता है। इसीलिए विचार पर भी विचार करने की बात हमारे धर्म ग्रंथों में कही गई है। वस्तुतः, विचार फूलों को चुनने के समान है और सोचना उनको माला में गूंथना है।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति द्वारा अभूतपूर्व आयोजन

द्विवार्षिक शिव पाटोत्सव

दिनांक 26 जनवरी से 1 फरवरी 2026 ई. तक

अनंतकोटि ब्रह्माण्ड नायक, भगवान् भूतभावन की अहैतुकी अनुकम्पा से सप्त दिवसीय **श्री गौतमेश्वर महादेव का द्विवार्षिक पाटोत्सव** अतिशय आनंद एवं उत्साह पूर्वक मनाया गया। उत्सव के अंगभूत '**ज्योतिष कर्मकाण्ड शिक्षा शिविर**' एवं '**श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा ज्ञानयज्ञ**' का आयोजन भी आश्रम की गौरव गरिमा के अनुरुप आनंददायी रहा। राष्ट्र के 77 वें गणतंत्र दिवस से प्रारंभ होने वाले इस महोत्सव में आश्रम के पदाधिकारियों एवं गणमान्य समाज बंधुओं की उत्साह वर्द्धक उपस्थिति रही।

दिनांक 26 जनवरी को प्रात: 9 बजे अध्यक्ष महोदय श्री मोहनराज जी उपाध्याय के करकमलों से ध्वजारोहण का कार्य सुसम्पन्न हुआ। महामंत्री श्री वेंकटेश्वर प्रसाद जी शर्मा, संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री भंवरलाल जी जोशी, अंकेक्षक श्री बालकृष्ण जी शर्मा, उपमंत्री श्री अशोक जी त्रिवेदी, श्री विकास जी शर्मा, इन्दौर से पधारे श्री सत्यनारायण जी शर्मा, श्री सावित्री प्रसाद जी गौतम, संजय जी जोशी एवं आश्रम के समस्त परिवार जनों की उपस्थिति रही।

तत्पश्चात् 10 बजे पुष्कर सरोवर का पूजन करके **भागवत शोभायात्रा** वराह घाट से नगर परिभ्रमण करके आश्रम पहुंची। कथा व्यास **डॉ. बृजबिहारी जी महाराज** व विद्वानों की उपस्थिति में पंडाश्री गोविन्दराम जी करीठ ने पुष्कर पूजन करवाया। सौभाग्यवती महिलाओं ने शिर पर मंगल कलश धारण किये। बैण्ड बाजे की मधुर ध्वनि से शोभायमान मंगल कलश यात्रा का मार्ग में श्रद्धालु भक्तों ने पुष्प वर्षा करके अभिनंदन किया।

प्रतिदिन वैदिक मंत्रोच्चार पूर्वक बटुक ब्रह्मचारियों ने भगवान् भोलेनाथ का रुद्राभिषेक व अर्चन किया।

पाटोत्सव के दिन आश्रम के **महामंत्री श्री वेंकटेश्वर प्रसाद** जी सपत्नीक पूजन में बैठे। 27 विद्वान् बटुकों ने सस्वर रूद्रीपाठ करके अभिषेक करवाया। भोलेनाथ का गुलाब पुष्प व अनेक मालाओं से मनोरम श्रृंगार किया गया।

नित्यप्रति घाटारानी के छात्र, बाड़मेर, जैसलमेर, अजमेर, किशनगढ़, वेदविद्यालय पुष्कर के छात्र, आश्रम में रहने वाले छात्र लगभग 50 छात्रों ने ज्योतिष कर्मकाण्ड शिक्षा शिविर में भाग लिया।

पाटोत्सव के मंगलमय अवसर पर ध्वज-पूजन करके **महर्षि गौतम** व **श्री गौतमेश्वर महादेव** को **ध्वजा चढ़ाई गई।**

ध्वजा का पूजन अध्यक्ष महोदय श्री मोहनराज जी उपाध्याय, महामंत्री श्री वेंकटेश्वर प्रसाद जी शर्मा, अंकेक्षक श्री बालकृष्ण जी शर्मा, संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा व ट्रस्टी श्री सत्यनारायण जी शर्मा ने किया।

पाटोत्सव के दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। श्रोताओं के अतिरिक्त **100 ब्राह्मण बटुकों** को विशेष आमंत्रित करके भोजन प्रसाद करवाया गया। सभी को भोजन के साथ **दक्षिणा** प्रदान की गई। **20,000/- बीस हजार रुपये** दक्षिणा लगी।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट द्वारा दूर दराज से आये आठ विद्वानों का श्रीमद् भागवत रसामृतम् पुस्तक, माला, दुपट्टा, श्रीफल प्रदान करके महामंत्री श्री वैंकटेश्वर प्रसाद जी शर्मा, संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा व अंकेक्षक श्री बालकृष्ण जी शर्मा ने बहुमान किया।

पाटोत्सव के शुभावसर पर अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्रीरामानंद सम्प्रदायाचार्य परम श्रद्धेय **स्वामी श्री दिव्यमुरारी बापू जी** का भागवत कथा में पदार्पण हुआ।

आपश्री ने पधार कर सर्वप्रथम भगवान् गौतमेश्वर महादेव का अर्चन-वन्दन व आरती की। तत्पश्चात् गुरुपूजन

शेष पृष्ठ 16 पर.....

श्री सीताराम जी जोशी को महर्षि गौतम गौरव सम्मान

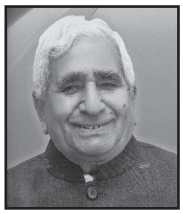

अत्यंत प्रसन्नता व गौरव का विषय है कि श्री पुष्कर गौतमाश्रम के संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम जी जोशी को श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण नगर सभा इन्दौर के द्वारा महर्षि गौतम जयन्ती चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत 2083 (19 मार्च 2026) के शुभ अवसर पर ''महर्षि गौतम गौरव सम्मान'' से विभूषित किया गया। उन्हें भेंट किया गया अभिनन्दन पत्र तथा महर्षि गौतम की अष्ट धातु की भूर्ति का चित्र संलग्न है।

उल्लेखनीय है कि श्री सीताराम जी जोशी का पूर्व में भी अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभा जिला इकाई चित्तौड़गढ द्वारा महासभा के 32वें राष्ट्रीय महाअधिवेशन में 25-26 दिसम्बर को इनकी समाज के प्रति सेवाओं के उपलक्ष्य में अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इसी प्रकार अभी रामनवमी के अवसर पर पाली में श्री सीताराम जी की अध्यक्षता में सर्व समाज की हिन्दू महा समिति के द्वारा शोभायात्रा एवं समारोह का आयोजन किया गया।

– सम्पादक

श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण नगर सभा (रजि.) इन्दौर

माँ सरस्वती के सपूत, वरिष्ठ साहित्यकार-शिक्षाविद् और श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण समाज के गौरव

पं. सीताराम जी जोशी

को सादर भेंट

श्री महर्षि गौतम सम्मान

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती का आशीर्वाद दुर्लभ है यह परम-सत्य है कि वाग्देवी अपनी कृपा हेतु उन सुपात्रों का चयन करती है जो प्रतिभा का विस्तार कर उसे जन-जन में प्रसारित करते हैं, मरुभूमि में जन्मे, मारवाड़ की ऐतिहासिक नगरी जोधपुर अंचल के विद्या-पुत्र पं. सीताराम जी जोशी अपार मेधा-मनीषी हैं वे प्रखर छात्र रहे और कालांतर में एक शिक्षाविद् के रूप में उन्होंने एकाधिक शिक्षण संस्थानों के माध्यम से भारत की नई पीढ़ी को विद्यादान का पुनीत यज्ञ भी चलाया नेपाल, हैदराबाद, उज्जैन, इन्दौर, जैसलमेर आदि नगरों में उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में अद्‌भुत योगदान देते हुए कई संस्थानों और युवाओं का जीवन प्रकाशमय किया।

आदरणीय जोशी जी ने शिक्षा क्षेत्र में असीम प्रतिष्ठा अर्जित करने के उपरांत श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण समाज के आराध्य महर्षि गौतम की प्रेरणा और आशीर्वाद से समाज सेवा की मशाल थामी उन्होंने जब भी कोई संकल्प हाथ मे लिया, उसकी सिद्धि अपने आप सुनिश्चित हो गई क्योंकि उनका मनोरथ हमेशा पावन और जन हितकारी रहा, आपने राष्ट्रीय स्तर पर श्री गुर्जर ब्राह्मण समाज की कई संस्थाओं को अपने अनुभव, ज्ञान और मार्गदर्शन से लाभान्वित किया यह आपके विराट व्यक्तित्व का ही प्रभाव है की मध्यभारत, दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के कई शहरों में उनके कृतित्व की सुगंध पहुंची।

समभाव समरसता से किसी कार्य को हाथ लेकर उसे शिखर तक पहुँचाने के लिए अथक परिश्रम करने वाले पं जोशी जी की कार्यशैली ऐसी रही है कि उनका नाम सुनकर ही मन श्रद्धा से झुक जाता है, यही कारण है कि भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव, पं. अटलबिहारी वाजपेयी, उपराष्ट्रपति और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत के कर कमलों से आपको सम्मानित किया गया, विभिन्न संस्थाओं के साथ ही अनेक प्रतिष्ठा आयोजनों सम्मेलनों प्रकाशनो, सारस्वत समागमों और सामाजिक उपक्रमों को आपके नेतृत्व, दृष्टि और मनन-चिंतन का लाभ मिला आपका निराभिमानी, स्नेहसिक्त, विनम्र एवं सौजन्यपूर्ण व्यक्तित्व आपको वंदनीय बनाता है और सम्मानों को सम्मान देता है।

श्री गुर्जर ब्राह्मण नगर सभा, इन्दौर समाज की गौरव मूर्ति के रूप में पं. सीताराम जोशी को श्री महर्षि गौतम सम्मान से अलंकृत कर असीम आनंद तथा गर्व का अनुभव कर रही है, भगवान श्री महाकालेश्वर-ओंकारेश्वर के बीच बसी, माँ नर्मदा और शिप्रा का सान्निध्य पाने वाती लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की नगरी इन्दौर में आपका सम्मान हमारे लिए एक आत्मीय अनुष्ठान की प्रसन्नता लेकर आया है हम अपने इष्टदेव से प्रार्थना करते हैं कि आप स्वस्थ रहें. चैतन्य रहे और आजीवन सक्रिय रहे जिससे अपने समाज को आप जैसे महामहोपाध्याय से ज्ञान, धर्म, कर्म, संस्कृति और संस्कारों की संपदा मिलती रहे।

वीरेन्द्र व्यास अध्यक्ष	प्रबंधकारिणी के सभी गणमान्य सदस्य	कमलेश तिवारी प्रधानमंत्री

गुडी पडवा, चैत्र शुक्ल 1 वि.सं. 2083 तदनुसार, गुरूवार 19 मार्च 2026

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति की साधारण सभा दिनांक 16.1.26 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 16.01.2026 (शुक्रवार) को श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति पुष्कर की साधारण सभा की मीटिंग श्री सीताराम जी जोशी अध्यक्ष ट्रस्ट समिति की अध्यक्षता में अपरान्ह 04:00 बजे अहिल्या हाल में आयोजित की गई।

उपरोक्त सभा में पदाधिकारी, सदस्य, ट्रस्टीगण, समाजबन्धु एवं मातृशाक्ति कुल 76 उपस्थित हुए। सर्वप्रथम महामंत्री ने महर्षि गौतम को नमन करते हुए इतनी भारी तादाद में ट्रस्टीगण पधारे उनका धन्यवाद करते हुए स्वागत किया। तत्पश्चात् अध्यक्ष जी मय पदाधिकारी, संरक्षक महोदय को महर्षि गौतम की पूजा अर्चना के लिये आमन्त्रित किया। श्री सीताराम जी, श्री मोहनराज जी, श्री हनुमान प्रसाद जी, श्री गोपीकिशन जी, श्री किस्तूर जी गील एवं स्वयं महामंत्री द्वारा घूपदीप नैवेद्य चढा कर माल्यार्पण कर अक्षपाद महर्षि गौतम की पूजा अर्चना की। पण्डित श्री रामस्वरूप जी जोशी द्वारा मंत्रोच्चार किया गया।

महामंत्री ने अध्यक्ष जी, संरक्षक महोदय एवं अन्य पदाधिकारियों को मंच पर विराजने का निवेदन किया। आप सभी ने मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया।

तत्पश्चात महामंत्री ने अध्यक्ष जी से सभा की कार्यवाही प्रारम्भ करने की अनुमति मांगी। अध्यक्ष जी ने महामंत्री को सभा की कार्यवाही प्रेषित ऐजेण्डे के अनुसार प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की।

मद संख्या 01 - गत बैठक दिनांक 22.06.2025 की कार्यवाही विवरणी की पुष्टि।

महामंत्री ने गत कार्यवाही विवरणी का सदन के सामने वाचन किया जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई।

मद संख्या 02 - ट्रस्टीयों के रिक्त पदों को भरने सम्बन्धित प्रबन्धकारिणी समिति के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान करना।

प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक दिनाक 31.08.2025 में प्रस्ताव संख्या 05 में लिये गये निर्णय के अनुसार श्री मनोज शंकर शर्मा, अजमेर (शहर), को ट्रस्टी बनाने का साधारण सभा द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई।

मद संख्या 03 - नवनिर्वाचित ट्रस्टीयों को शपथ दिलाना।

श्री मनोज शंकर शर्मा, अजमेर (शहर) से निर्वाचित ट्रस्टी किसी आवश्यक निजी कार्यवश उपस्थित नहीं हो पाये। इसलिये आगामी प्रबन्धकारिणी बैठक में शपथ दिलाई जाएगी।

मद संख्या 04 - प्रबंधकारिणी के नव निर्वाचन पर विचार-विमर्श करना।

महामंत्री ने सम्मानित ट्रस्टीयों एवं सदन से इस विषय पर अपने विचार रखने को आमंत्रित किया जो निम्नानुसार है।

श्री एसपी गौतम, पुष्कर - सर्वप्रथम श्री एसपी गौतम ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सभी को संस्था के विधान के अनुसार समाज हित में कार्य करना चाहिये। सभी ट्रस्टीयों को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिये। संस्था को ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो सभी को साथ लेकर चले। विधान की रक्षा करे। इस संस्था ने पूरे भारतवर्ष में अपना महत्व दर्शाया है। व्यक्ति ऐसा हो जो त्यागवान, धैर्यवान, शीलवान, मित्रवत आर्थिक रूप से सक्षम हो। ऐसा एक व्यक्तित्व मेरी जानकारी में आप सभी भी उनसे अच्छी तरह से परिचित है और वो है श्री मोहन राज उपाध्याय। मैं हृदय से उनका नाम अध्यक्ष पद के लिये प्रस्तावित करता हूँ।

श्री के सी शर्मा, इन्दौर - आपने सभी पदाधिकारियों, सम्मानित मंच. को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे यहाँ आये 2 घण्टे हुए हैं। मेरी 30-40 ट्रस्टीयों से चर्चा हुई है अध्यक्ष के लिये सबसे उचित उम्मीदवार श्री मोहनराज उपाध्याय ही है। कुछ ट्रस्टीयों के ऐसे विचार भी है कि अध्यक्ष निर्विरोध और बाकी पदों के लिये निर्वाचन किया जा सकता है। एक बात में आपको बताना चाहूँगा कि डीडवाना में एक कार्यक्रम किया था उसमें भूतपूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार श्रीमती वसुन्धरा राजे पधारी थी। आपने चार बार मोहनराज जी के बारे में पूछा। इससे इनकी पहुँच का पता चलता है। मैं चाहूँगा कि मोहनराज जी को निर्विरोध अध्यक्ष बनायें।

श्री सत्यदेव जी, अजमेर - आपने सदन को सम्बोधित करते हुए बताया कि किसी भी व्यक्ति जो अध्यक्ष का उम्मीदवार हो उसमें निम्न तीन गुण होने चाहिये। पहला आश्रम के नजदीक क्षेत्र का निवासी हो, दूसरा आर्थिक रूप

से सक्षम हो, तीसरा जो सभी ट्रस्टीयों से सम्पर्क में हो। श्री रामस्वरूप जी पंचारिया भूतपूर्व अध्यक्ष ऐसे ही थे। वे पूरे भारतवर्ष के ट्रस्टीयों के सम्पर्क में रहे। श्री मोहनराज जी ने शैक्षणिक परिषद की जमीन खरीदने का संकल्प किया था। आप अपने राजनैतिक प्रभाव से राजस्थान सरकार से भी एलाटमेण्ट करवा सकते है। मोहनराज जी को ही अवसर दिया जाना चाहिये। पहले भी मैंने कहा था कि शैक्षणिक परिषद् में जो एक लाख रुपये देगा उसको हमें कुछ अधिकार भी देना चाहिये। नियमों में थोड़ा परिर्वतन करें।

श्री सोहन लाल जी, पाली - आपने सदन को बताया कि मैं सत्यदेव जी की बात से सहमत हूँ। भूमि क्रय करने का प्रयास पिछले 10 वर्षों से चल रहा है। कई बार जमीन भी देखी है पर सफलता नहीं मिली। मेरा विचार है कि जो व्यक्ति एक लाख रुपये देता है वो किसी प्रकार के स्वार्थ के लिये नही देता है। उदाहरण के लिये कोई राम मंदिर में पैसे देते हैं तो वहाँ किसी तरह की सुविधा के लिये थोड़े ही देता है। कमरा बनाते हैं तो क्या उसको फ्री देते हैं। 2027 में संस्था की 125 वीं जयन्ती मनायेंगे। मोहनराज जी का पहले भी काम देखा था। ये सारा जो विकास हुआ वो मोहनराज जी के कार्यकाल में हुआ। आपके समय बाहर की जमीन खरीदी गई। मोहनराज जी ने कभी किसी को नहीं कहा कि मुझे अध्यक्ष बनायें।

श्री राधेश्याम जी शास्त्री, नई दिल्ली - आपने कहा कि अध्यक्ष ही नही पूरी कार्यकारिणी ही निर्विरोध बनायें।

श्री सत्यनारायण जी, इन्दौर - आपने बताया कि इन्दौर सभा ने एक गौतम रत्न नामक पुरुस्कार देना चालू किया था। उसमें 30-40 लोगों के नाम आये पर सर्वसम्मति मोहनराज जी के नाम पर ही सहमति बनी। आप ने संस्था का सम्पूर्ण विकास किया है और मोहनराज जी ही अध्यक्ष पद के लिए सबसे योग्य उम्मीदवार हैं।

श्री महेन्द्र शर्मा जी, भीलवाडा - सभी मोहनराज जी का नाम प्रस्तावित कर रहे है। मेरे विचार में क्या और कोई उम्मीदवार नहीं है जो अध्यक्ष पद के लिये योग्यता रखता हो। किसी और को भी मौका दिया जाना चाहिये। मेरी नजर में श्री गोपीकिशन जी व्यास इस पद के योग्य हैं। इस बार इनको मौका दिया जाना चाहिये।

श्री वासुदेव जी, अहमदाबाद (नीमड़ी) - आपने सदन को सम्बोधित करते हुए बताया कि यह एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। प्रश्न चयन मनोनयन या चुनाव का नही है सर्वसम्मति का है। किसी पर आक्षेप नही लगायें। मोहनराज जी ने कभी किसी को नहीं कहा कि मुझे अध्यक्ष बनायें। अधिकतर ट्रस्टीयों की भावना मोहनराज जी के प्रति है। संस्था के हित में सुझाव जरूर देवें पर किसी पर आक्षेप नहीं लगायें। सभी ट्रस्टी एक साथ रहें। यही हमारी ताकत है। अध्यक्ष सर्वसम्मति से बने।

श्री हनुमान प्रसाद शर्मा, अजमेर - महर्षि गौतम को नमन करते हुए अपने विचार रखे। आपने बताया कि इस गम्भीर विषय पर सब मनन करे। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का ट्रस्ट में कोई स्थान नहीं है। जो समर्पण भाव रखता है ट्रस्ट के प्रति लगाव रखता है अध्यक्ष उसे ही बनाना चाहिये। जिसने समर्पित भाव से काम किया हो उसको पाँच बार भी मौका दें तो बुराई नहीं है। जिसने पहले भी विकास किया हो उसको मौका देवें। मोदीजी को भी जनता ने तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाया ही है।

श्री आशीष जी, नागौर - सभी को प्रणाम किया, आज की साधारण सभा में जो उपस्थिति है देख कर आनन्द आया। जिस नगरी में हम बैठे हैं केन्द्र है। पूरे राज्य एवं बाहर से मारवाड, मेवाड, हाडौती, शेखावाटी सभी संभाग से ट्रस्टीगण पधारे हैं। पूरे भारतवर्ष को मोहनराज जी ने एक कर दिया। इस हॉल से पूरे भारतवर्ष में मैसेज जायेगा जो सभी के लिये अनुकरणीय होगा। हमारी संस्था एक आदर्श संस्था है इसलिये जो भी अध्यक्ष बने सर्वसम्मति से बने। आज इस भव्यरूप में एक सौ एक प्रतिशत मोहनराज जी का बहुत बड़ा योगदान है। समाज से पैसा लेना आसान काम नहीं है। अध्यक्ष मोहनराज जी सर्वसम्मति से बनें ऐसा मेरा विचार है।

श्री भागीरथ जी, चैन्नई - बड़े संक्षेप में आपने कहा कि अध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्विरोध बनाया जाये, जो आश्रम हित में कार्य करे उसे बनाये। इससे आश्रम आगे बढ़ेगा। प्रबन्धकारिणी के वर्तमान 3 साल के कार्यकाल को 5 साल करना चाहिये।

श्री जवाहर लाल उपाध्याय, जोधपुर - मैं क्षमा चाहता हूँ आने में देरी हुई, सभी के विचार मैं सुन नही पाया।

जो सुना मेरा निवेदन बन्द मुट्ठी ही अच्छी है। मुझे आते 10-15 वर्ष हो गये जो परम्परा निर्विरोध की चल रही है उसको जारी रखें। आगे भी संस्था को बहुत काम करने हैं। योग्य अध्यक्ष निर्विरोध होना चाहिये। योग्य तो सभी 108 ट्रस्टी है। मैंने व्हाटशेप पर भी अपने विचार रखे थे। मेरी प्रथम चॉइस मोहनराज जी हैं। फिर सदन जैसा उचित समझे आप सभी स्वतंत्र हैं।

श्री वीपी शर्मा जी अजमेर - सदन को सम्बोधित करते हुए बहुत ही सारगर्मित और अनुभवी विचार रखे। आपने कहा कि सदन में इस महत्वपूर्ण बिन्दु पर सभी ने अपने विचार रखे। मेरे विचार से केवल अध्यक्ष ही नहीं पूरी कार्यकारिणी ही निर्विरोध होनी चाहिये जो एक बढ़िया टीम की तरह काम कर सके। आश्रम के प्रति समर्पित भाव हो और तन मन धन से आश्रम का सहयोग कर सके। शैक्षणिक ट्रस्ट में कुछ नहीं कर पाये उस पर अभी बहुत काम करना है। इसके नियमों में सुधार किया जाना है। सारी ऊर्जा शैक्षणिक ट्रस्ट पर लगाने की आवश्यकता है। जो यह कर सके उसे अध्यक्ष बनाना चाहिये।

श्री जितेन्द्र जोशी, अजमेर - सदन को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम सभी बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु पर विचार कर रहे हैं। बड़ा सुखद लग रहा है। 108 माला में मुनके होते हैं उनको पिरोने के लिये मोहन रूपी धागे की, आवश्यकता है। गौतम ऋषि के न्याय शास्त्र को आश्रम हित में बखूबी समझते हैं। मैं पहले ओपी दुबे साहब का ड्राइवर बनकर आता था वो समय भी देखा और आज का विकास भी देखा। कई अध्यक्ष और मंत्री आये सभी ने अच्छा विकास किया। अब यह विकास को आगे मोहन की माला ही बढ़ा सकती है।

श्री गोपी किशन जी व्यास, भीलवाड़ा - आपने कहा कि आज भी हमारे बीच किसी तरह के मतभेद नहीं हैं। किसी को महेन्द्र जी की बात का बुरा लगा हो तो मैं माफी चाहता हूँ। वैसे सभी को अपने विचार रखने की आजादी है। मैं भूतपूर्व अध्यक्ष रामस्वरूप जी पंचारिया के कार्यकाल से आश्रम आता हूँ, और कार्यकारिणी में रहा हूँ। मोहनराज जी ने अपने पिछले कार्यकाल में सुपरहिट कार्य किया था। काम करते हैं तो कमी रह सकती है। 500 सदस्यों का शैक्षणिक परिषद के लिये लक्ष्य है। सभी दो दो सदस्य बनायें तो सदस्य बनाये जा सकते हैं।

श्री राधेश्याम जी, बडगाँव - आपने कहा कि अध्यक्ष पद के लिये मोहनराज जी के लिये मेरी सहमति है पर महामंत्री और कोषाध्यक्ष को बदलना चाहिये। नये लोगों को मौका दिया जाना चाहिये। बाकी आगे सदन जो चाहे।

श्री रमेशजी तिवाडी, कलकत्ता - आपने एक कविता की चार पंक्तियाँ सुनाई उसका सार यह है कि अभी मोहन जिंदगी की असली उड़ान बाकी है। मेजोरिटी मोहनराज जी की है।

डॉ. पुरुषोत्तम गौतम, सवाई माधोपुर - सभी का हार्दिक अभिनन्दन। यह संस्था पूरे हिदुस्तान में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। पिछला कार्यकाल मोहनराज जी का स्वर्णिम रहा। इन्दौर सभा ने आपको गौतम रत्न से नवाजा। आप संस्था के लिये समय देते हैं तो तीसरी बार भी मौका मिलना चाहिये। अच्छा कार्य करने के कारण मोदी जी भी तीसरी बार प्रधानमंत्री हैं।

श्री मोहनराज जी उपाध्याय, लाम्पोलाई - माँ भगवती के चरणों में नमन, महर्षि गौतम जिन्होंने ब्रह्माजी की नगरी में अपने तपोबल से अपना वर्चस्व जमाया, माँ अहिल्या को नमन। आप सभी ने जो मेरे लिये विचार व्यक्त किये। हमारे मारवाड में कहावत है कि शब्द भी शरमाये। मेरे पिछले कार्यकाल में दो साल करोना आया। आप सभी देश के कोने कोने से संस्था को गति देने के लिये पधारे हैं। आप सभी ने जो मेरे पर विश्वास किया उसमें मैं खरा उतरने का प्रयास करूंगा। जो भी निर्णय किये जायें उनमें सर्व सुझाव मान्य हो। एक दूसरे की टाँगे नहीं खींचें। यहाँ जो भी पधारे हैं किसी न किसी संस्था में अपने क्षेत्र में जुडे हुए हैं। 111 की सोच एक होनी चाहिये, अगर आप सभी साथ देंगे तो 5 करोड़ का कार्य भी आसान होगा और नहीं देंगे तो पाँच रूपये का कार्य भी मुश्किल होगा। महेन्द्र जी की वाणी को भी नमन समस्त कार्यकारिणी निर्विरोध बनायें इसी में संस्था की भलाई है।

श्री वीपी शर्मा जी अजमेर - आप द्वारा प्रस्ताव रखा गया कि संस्था में अलग अलग फण्ड हैं। उनको शैक्षणिक परिषद की जमीन खरीदने के लिये काम में लिया जाये।

सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव को पारित किया गया जमीन खरीद के कार्य के लिये प्रबन्धकारिणी समिति को अधिकृत किया जाता है।

अन्त में महामंत्री ने अध्यक्ष जी को सदन को सम्बोधित कर धन्यवाद देने का अनुरोध किया।

अध्यक्ष जी ने सदन का इतनी भारी मात्रा में पधारने के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया। आपने कहा कि गौतम आश्रम समाज की एक नम्बर संस्था है। और भी कई संस्थाए है पर इससे बेहतर कोई नही। मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आभार प्रकट करता हूँ। समस्त प्रबन्धकारिणी का निर्वाचन निर्विरोध हो तो इससे अच्छी बात कुछ भी नहीं हो सकती। आप सभी इस पर विचार करें। आप सभी का धन्यवाद।

अन्त में महामंत्री ने दिवंगत ट्रस्टीगणों को 2 मिनट का मौन रख श्रद्धांजलि अर्पित करने का निवेदन किया। सभी ने 2 मिनट का मौन रख निम्नलिखित ट्रस्टी गणों को श्रद्धांजली अर्पित की।

1. स्व. श्री अरुण जी नराणियाँ, हैदराबाद।
2. स्व. श्री सम्पतराज जी सालोलिया, ग्राम लोटीती हॉ.मु. ब्यावर।
3. स्व. श्री रामावतार जी उपाध्याय, मुम्बई

।। जय महर्षि गौतम ।।

❑❑❑

''कलियुग में आयु का निरंतर क्षरण।''

सौ वर्ष की आयु कलियुग के लिये मानक के रूप में प्रतिपादित है। वास्तविक रूप में जो देखने को मिल रहा है उसमें ज्यादातर लोग सत्तर से पचहत्तर की आयु में मृत्यु को प्राप्त कर जा रहे हैं। दुर्घटनाओं से होने वाली मृत्यु को छोड़ भी दिया जाए तो भी नैसर्गिक दीर्घ आयु समाज में कम देखने को मिल रही है। बहुत कम लोग सौ तक पंहुच पा रहे हैं। केवल तपस्वी और योग निरत लोग ही सौ को पार कर रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या अपवाद है। सौ वर्ष या इससे ऊपर की आयु को कलियुग में महत् पुण्य और साधना का प्रतिफल कहा गया है। धर्मिष्ठ, सुशील और सुपथ्य भोजी व्यक्ति ही दीर्घायु का अधिकारी होता है। विविध प्रकार के पापों से आयु का क्षरण होता है।

आयु वृद्धि का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपादान प्राणायाम को कहा गया है। योग और प्राणायाम से दीर्घायु की प्राप्ति एक सतत प्रक्रिया है। जीवन जितना ज्यादा व्यस्त और अनियमित होगा आयु उतना अधिक संकटग्रस्त होती जाएगी।

योग और प्राणायाम के बाद दूसरे स्थान पर आयु का श्रेष्ठ कारक ब्रह्मचर्य है। कलियुग में इस पर बात करना भी पिछड़ापन माना जा रहा है। दांपत्य शुद्धि भी ब्रह्मचर्य का अंग कहा गया है। दीर्घायु का तीसरा कारण आहार शुद्धि है। साथ ही अल्पाहार और नियत आहार। गीता में इसका प्रतिपादन है।

घटती आयु और कम होती शारीरिक क्षमता कलियुग के हरेक सौ वर्षों पर चिह्नित होती जा रही है। मनुष्य की ऊँचाई लगातार धीमी गति से घट रही है। पंचमहाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) का निरंतर प्रदूषित होना भी जीवन को हानि पहुॅचा रहा है।

कलियुग की बावनवीं शताब्दी चल रही है। इस युग में यांत्रिक उत्कर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है। केमिकल दवाओं से एक ओर त्वरित लाभ हो रहा है तो दूसरीओर प्रतिक्रिया परक दूसरी घातक बीमारियों से जीवन समाप्त होता जा रहा है। बचाव के लिए मनुष्य के कायिक, वाचिक और मानसिक सदाचार में वृद्धि के उपायों का प्रचार भी बढ़ना चाहिए। तभी गिरती आयु के वेग को थामा जा सकता है।

जीवन सिद्धान्तों की चर्चा आयुर्वेद के मान्य सिद्धांतों के अनुरूप होने से ही मनुष्य की आयु की रक्षा हो सकेगी। दीर्घ जीवन से मनुष्य अपने अनुभवों को सृष्टि उपकार में लगा पाता है।

जो स्वयं को सभी प्रकार से दीर्घ जीवी और सुखी रखना चाहता हो वह दूसरों को भी उसी दिशा में प्रवृत्त करे तभी वातावरण अनुकूल रहेगा।

– भगवद्गीता समूह से साभार

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की प्रबन्ध कारिणी समिति बैठक दिनांक 17.1.26 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 17.01.2026 शनिवार को श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति पुष्कर की नवनिर्वाचित प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री मोहनराज जी उपाध्याय की अध्यक्षता में सायं 6.15 बजे से महर्षि हॉल में आयोजित की गई।

इस बैठक में पदाधिकारी, प्रबन्धकारिणी समिति सदस्य, ट्रस्टी तथा समाज बन्धु कुल मिलाकर 65 सदस्यों की उपस्थिति रही। महामंत्री ने बैठक की कार्रवाई शुरू करते हुए सर्वप्रथम नवनिर्वाचित अध्यक्ष, संरक्षकगण, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष व मंत्री तथा सभा में उपस्थित महासभा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी जोशी व डॉ. मिथिलेश गौतम को मंच पर आसन ग्रहण करने हेतु आमंत्रित किया।

तत्पश्चात मंचासीन महानुभावों से महर्षि गौतम की पूजा अर्चना दीप प्रज्वलित करने का आग्रह किया सभी पदाधिकारियों व महासभा अध्यक्ष द्वारा महर्षि गौतम के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर पूजा अर्चना की तथा महर्षि गौतम की जय घोष के साथ शुभारंभ किया गया।

महामंत्री ने अध्यक्ष जी की अनुमति से संरक्षक पद के लिए श्री सीताराम जी जोशी पाली, श्री विजय कुमार उपाध्याय सोलापुर एवं श्री हनुमान प्रसाद शर्मा अजमेर के मनोनयन की घोषणा की। जिसका करतल ध्वनि से सभा में स्वागत किया गया।

महामंत्री ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार शर्मा व सहायक निर्वाचन अधिकारी श्री हरिदत्त शर्मा का आभार व धन्यवाद किया तथा निर्विरोध निर्वाचन के लिए सभी ट्रस्टी बन्धुओं का भी आभार प्रकट किया।

मंचासीन पदाधिकारियों से दोनों निर्वाचन अधिकारियों का शॉल, माला आदि से सम्मान करने का आग्रह किया। अध्यक्ष जी, महासभा अध्यक्ष सहित समस्त मंचासीन पदाधिकारियों द्वारा निर्वाचन अधिकारियों को शॉल व माला से सम्मानित किया।

महामंत्री ने सभा में विशेष रूप से उपस्थित महासभा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जोशी व भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री डॉ मिथिलेश गौतम का सम्मान करने हेतु आग्रह किया। दोनों अतिथियों को शॉल, माला व साफा से सम्मानित किया गया। सभा में उपस्थित श्री प्रद्युम्न जोशी व श्री अनिल जोशी को भी सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात महासभा अध्यक्ष द्वारा नवनिर्वाचित प्रबंधकारिणी समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों का साफा व दुपट्टा से सम्मान किया गया। डॉक्टर मिथिलेश गौतम ने अपने विचार रखते हुए कहा कि मैं अपना पूर्ण समर्थन दूंगा जो मेरे लायक कार्य होगें अवश्य करूंगा।

महामंत्री ने बैंक से लेन देन हेतु पदाधिकारियों को अधिकृत करने का प्रस्ताव रखा। सर्व सम्मति से अध्यक्ष श्री मोहनराज जी उपाध्याय, महामंत्री वेंक्टेश्वर प्रसाद शर्मा तथा कोषाध्यक्ष भंवरलाल जोशी इन तीन पदाधिकारियों में से किन्ही दो के हस्ताक्षर से बैंक में लेन देन करने हेतु अधिकृत किया गया।

महामंत्री ने जानकारी दी कि ट्रस्ट के विभिन्न कार्य हेतु समितियों का गठन प्रबंध कारिणी समिति की अगली बैठक में किया जाएगा।

महामंत्री ने महासभा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जोशी से सभा को संबोधित करने का आग्रह किया। महासभा अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा कि मैं आज आप सभी के बीच उपस्थित होकर अभिभूत हूं। इस ट्रस्ट की कार्यकारिणी के चुनाव निर्विरोध अब तक होते रहे हैं उसके लिए आप सबको धन्यवाद व साधुवाद देता हूँ। हम सब पूरा समाज एक रहेंगे तो ही समाजहित के कार्य कर सकेंगे। इस आश्रम में बहुत विकास हुआ है, इसके लिए मैं अध्यक्ष श्री मोहनराज जी व समस्त कार्यकारिणी को धन्यवाद देता हूँ। यह समाज के लिए डायमंड है। मैं पूर्ण सहयोग देने का वचन देता हूँ, श्री सीताराम जी मेरे गुरु है इनको मैं प्रणाम करता हूँ।

संरक्षक श्री सीताराम जी जोशी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि ऐसा गौतम आश्रम पूरे देश में केवल पुष्कर में ही है। मैं 40 साल से यहां आ रहा हूँ, इस आश्रम का ट्रस्टी

बनना एक गौरव की बात है मुझे जो आपने 3 वर्ष में सहयोग दिया उसके लिए आप सबका आभार प्रकट करता हूँ।

संरक्षक श्री विजय कुमार जी ने कहा कि मैं सोलापुर रहता हूँ लेकिन मेरा मन यहां रहता है यहां बहुत विकास हुआ है।

संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि मैं पिछले करीब 22 वर्षों से ट्रस्टी हूँ। तब से अब तक लगातार सेवाएं दे रहा हूँ सबने एक टीम और आपसी विश्वास के साथ कार्य किया है। मैं निर्विरोध निर्वाचन के लिए सबको धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूं कि यह विकास की गति आगे भी जारी रहेगी।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सोहनलाल जी जोशी ने कहा कि यहां की परंपरा रही है कि प्रबन्धकारिणी समिति का निर्विरोध निर्वाचन होता आया है। अब हमें समाज हित के कार्य करने हैं, जो हमारा शैक्षणिक गतिविधियों का प्रोजेक्ट है उसे पूरा करना है। वैसे अध्यक्ष जी मोहनराज जी ने एक वर्ष का संकल्प किया है। हम सब मिलकर इसको पूरा करेंगे ऐसा मुझे विश्वास है। महासभा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी जोशी का भी मैं आभार प्रकट करता हूँ कि आप पधारे।

अंत में अध्यक्ष श्री मोहनराज जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि महासभा अध्यक्ष व्यस्त समय में से समय निकालकर यहां उपस्थित हुए उसके लिए मैं आभार प्रकट करता हूँ। मैं चुनाव अधिकारियों का भी आभार प्रकट करता हूँ। उन्होने निर्विरोध चुनाव करवाये। मैं सभी ट्रस्टियों का भी आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने प्रबंध कारिणी के निर्विरोध चुनाव करने में सहयोग प्रदान किया। प्रबंधकारिणी एक टीम के रूप में कार्य करेगी, ऐसा मैं आप सबको विश्वास दिलाता हूँ। अब हमें शैक्षणिक गतिविधियों के लिए भूमि खरीदने के लिए कार्य करना है। मैं महासभा अध्यक्ष से इसमें सहयोग करने की अपील करता हूँ, महासभा अध्यक्ष जी ने खड़े होकर अपनी पूर्ण सहमति प्रदान की।

अध्यक्ष जी ने अन्त में सभी को पुन: धन्यवाद देते हुए सभा कार्यवाही समाप्त की।

जय महर्षि गौतम

पृष्ठ 9 का शेष.....

करके 21 ब्राह्मण बटुकों का दक्षिणा प्रदान करके बहुमान किया। पुन: व्यास पीठ पर विराजमान व्यास जी का अभिनंदन-स्वागत करके भागवत जी की आरती उतारी।

आश्रम ट्रस्ट के पदाधिकारी सहित भक्तों ने आपश्री का माला, दुपट्टा, दक्षिणा आदि से विशिष्ट बहुमान किया। पुन: आपश्री ने माधुर्यमिश्रित शास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा पुष्कर महिमा, सत्संग महिमा, भागवत महिमा पर अपने भाव व्यक्त करके आशीर्वचन प्रदान किया।

पूर्णाहुति दिवस पर **गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति** द्वारा परम श्रद्धेय कथा व्यास **डॉ. बृजबिहारी जी महाराज**, गौतम का सम्मान किया गया।

पूर्णाहुति दिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रात: 10 बजे महामंत्री जी ने भगवान् भूतभावन श्री गौतमेश्वर महादेव का सपत्नीक बैठकर पूजन किया। तत्पश्चात् चार जोड़े सपत्नीक हवन में बैठे। महामंत्री श्री वेंकटेश्वर प्रसाद जी शर्मा, कथा यजमान श्री सुरेश शास्त्री, विद्युत अभियंता श्रीकान्त शर्मा पुत्र श्री प्रभुलाल शास्त्री एवं विद्युत अभियंता श्री आशीष जी ब्यावर ने आहुतियां प्रदान की। 21 विप्र बटुकों ने मंत्रोच्चार करके यज्ञ करवाया। हवन के पश्चात् भागवत प्रसादी स्वरुप भंडारे का आयोजन सम्पन्न हुआ। सभी आगन्तुक भक्तवृन्द ने भगवद्-प्रसाद ग्रहण किया। भोजन प्रसाद के साथ-साथ दक्षिणा भी प्रदान की गई। लगभग 10,000/- दस हजार रुपयें दक्षिणा राशि वितरित हुई।

अध्यक्ष जी, महामंत्री जी के कर कमलों से विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

इस प्रकार अत्यन्त हर्ष, उल्लास व उमंग के साथ भगवान् भूतभावन का द्विवार्षिक शिव पाटोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

जय महर्षि गौतम ।

प्रस्तुति

संयोजक - प्रभुलाल शास्त्री

ट्रस्टी श्रीपुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की प्रबन्ध कारिणी समिति बैठक दिनांक 21.3.26 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 21.03.2026 शनिवार को श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति की प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक अध्यक्ष श्री मोहनराज जी उपाध्याय की अध्यक्षता में प्रात: 11.00 बजे से महर्षि हॉल में आयोजित की गई।

आज की बैठक में प्रबन्धकारिणी समिति पदाधिकारी, संरक्षक, सदस्य व ट्रस्टी सहित कुल 18 की उपस्थिति रही तथा 11 समाजबंधु विशेषकर जोधपुर से उपस्थित हुए।

महामंत्री ने सर्वप्रथम अध्यक्ष जी, संरक्षकगण, वरिष्ठ उपाध्यक्ष जी को मंचासीन होने का आग्रह किया तत्पश्चात महर्षि गौतम के चित्र पर माल्यार्पण पूजा अर्चना तथा दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने का आग्रह किया।

अध्यक्ष जी, संरक्षकगण, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, महामंत्री ने संयुक्त रूप से महर्षि गौतम की पूजा अर्चना की तथा दीप प्रज्वलित किया।

महामंत्री ने अध्यक्ष जी की अनुमति से बैठक की कार्यवाही महर्षि गौतम की जय घोष के साथ शुरू करते हुए कहा कि आज की बैठक के एजेन्डे के अनुसार कार्यवही से पूर्व आप सभी को यह जानकारी दे रहा हूं कि दिनांक 19.03.2026 को महर्षि गौतम जयंती पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। प्रात: महर्षि गौतम व माता अहिल्या तथा शिव परिवार का अभिषेक किया गया। तत्पश्चात हवन किया गया। महर्षि गौतम का आकर्षक श्रृंगार कर महाआरती की गई व प्रसाद वितरण किया गया।

इसी प्रकार आज माता अहिल्या जयंती के उपलक्ष में अभिषेक व हवन तथा भव्य श्रृंगार के बाद महाआरती की गई। तत्पश्चात जोधपुर मां अहिल्या शिक्षा न्यास की ओर से आश्रम की महिला कर्मचारियों को वस्त्र व राशि भेंट की गई।

उपरोक्त आयोजन के लिये बैठक में उपस्थित सदस्यों द्वारा करतल ध्वनि के साथ सराहना की गई। तत्पश्चात महामंत्री ने जानकारी दी कि ट्रस्ट समिति के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान संरक्षक श्री सीताराम जी जोशी को इंदौर नगर सभा द्वारा महर्षि गौतम गौरव सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया जो हमारे इस ट्रस्ट के लिए गौरव व गर्व का विषय है। इसके लिए आज की बैठक में अध्यक्ष जी द्वारा श्री सीताराम जी जोशी का साफा व दुपट्टा से सम्मान किया गया।

इसी क्रम में जोधपुर से पधारे हुए समस्त समाज बंधुओ का सम्मान किया गया। जोधपुर के समाज बंधुओं द्वारा अध्यक्ष एवं महामंत्री का साफा व माला के साथ सम्मान किया गया।

महामंत्री ने अध्यक्ष जी से आग्रह किया कि अजमेर शहर के नवनिर्वाचित ट्रस्टी श्री मनोज शंकर शर्मा को शपथ दिलायें। अध्यक्ष द्वारा नवनिर्वाचित ट्रस्टी श्री मनोज शंकर शर्मा अजमेर शहर को शपथ दिलाई गई। तत्पश्चात एजेण्डे के अनुसार कार्यवाही शुरू की गई।

महामंत्री ने जानकारी दी कि 80G व 12AB की इनकम टैक्स विभाग से स्वीकृति प्राप्त हो गई।

मद संख्या 01 - गत बैठक दिनांक 17.01.2026 की कार्यवाही की विवरण की पुष्टि।

महामंत्री ने गत बैठक दिनांक 17.01.2026 की कार्यवाही की विवरणी का पठन किया। जिसकी सर्व सम्मति से पुष्टि की गई।

मद संख्या 02 - गत बैठक के निणयों पर क्रियान्वयन रिपोर्ट।

महामंत्री ने बताया कि गत बैठक में बैंक खातों के लेनदेन के लिए अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष को अधिकृत किया गया था। उसकी अनुपालना कर दी गई है। विभिन्न समितियों का गठन आज की बैठक में किया जाएगा।

मद संख्या 03 - सत्र 2026-27 के अनुमानित बजट को स्वीकृति प्रदान करना।

महामंत्री ने सत्र 2026-27 का अनुमानित बजट प्रस्तुत किया जिसे विस्तृत विचार विमर्श पश्चात सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई।

मद संख्या 04 - प्रबंध संचालन व्यवस्था आदि में पारदर्शिता के लिए विभिन्न समितियों का गठन करना।

महामंत्री ने विभिन्न समितियों के संबंध में जानकारी दी

जिसके अनुसार निम्न समितियों का सर्वसम्मति से गठन किया गया।

भंडार समिति

1. श्री राजेंद्र कुमार शर्मा कोटा — प्रभारी
2. श्री राजेंद्र शर्मा अजमेर — सदस्य
3. श्री किस्तूर चन्द गील जयपुर — सदस्य

समिति द्वारा वर्ष में दो बार समस्त स्टॉक का भौतिक सत्यापन करना आवश्यक है।

छात्रावास व भोजनालय समिति

1. श्री परमेश्वर उपाध्याय अजमेर — प्रभारी
2. श्री जितेंद्र जोशी अजमेर — सदस्य
3. श्री संदीप जोशी अजमेर — सदस्य

महामंत्री ने कहा कि उक्त समिति छात्रों की पढ़ाई व ज्ञान के स्तर तथा अनुशासन आदि में सुधार की कार्यवाही करेगी। छात्रों को प्रतिदिन पढ़ाई हेतु एक संस्कृत अध्यापक की नियुक्ति का निर्णय भी लिया गया। समिति समय-समय पर भोजनालय की व्यवस्था आदि की कार्यवाही करेगी।

नवनिर्माण व क्रय समिति

1. श्री जवाहरलाल उपाध्याय जोधपुर — प्रभारी
2. श्री परमेश्वर उपाध्याय अजमेर — सदस्य
3. श्री हनुमान प्रसाद शर्मा अजमेर — सदस्य
4. श्री बालकृष्ण शर्मा जूनियां — सदस्य
5. श्री अशोक त्रिवेदी अजमेर — सदस्य
6. श्री जयप्रकाश उपाध्याय खींवसर — सदस्य

महामंत्री ने कहा कि यह समिति आश्रम में नवनिर्माण, मरम्मत कार्य एवं किसी भी प्रकार के सामान क्रय का कार्य नियमानुसार टेण्डर/कोटेशन प्राप्त करने के लिए अधिकृत रहेगी। प्रत्येक समिति में कोषाध्यक्ष श्री भंवरलाल जोशी सदस्य वित्त होंगे। प्रत्येक समिति की कार्यवाही में अध्यक्ष/महामंत्री की उपस्थिति आवश्यक होगी।

मंद संख्या 05 - ट्रस्टियों के रिक्त पदों की पूर्ति हेतु विचार कर निर्णय लेना।

महामंत्री ने जानकारी दी कि वर्तमान में

1. तेंलगाना हैदराबाद से श्री अरूण जी नाराणिया
2. महाराष्ट्र मुम्बई से रामावतार जी उपाध्याय
3. जोधपुर संभाग पाली जिले की जैतारण तहसील से श्री संपतराज जी के स्वर्गवास
4. तथा कल श्री खेमाराम जी जोशी बाडमेर के देवलोकगमन से ट्रस्टी पद रिक्त हुये है।

इस पर सर्ववम्मति से निर्णय लिया गया कि अगली बैठक में इस पर निर्णय लिया जाए। महांमत्री ने जानकारी दी कि ट्रस्ट के संशोधित विधान को देवस्थान विभाग से स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

मद संख्या 06 - ट्रस्ट की 2025-26 की आय में से विशेष सुरक्षित कोष हेतु राशि स्वीकृत करना।

सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया जिसके अनुसार ट्रस्ट समिति के विधान की धारा 12 में उल्लिखित विभिन्न सामाजिक कार्यो आदि जैसे भूमि खरीद, नव निर्माण, महिलाओं छात्रों आदि को आर्थिक सहायता, भवन मरम्मत, विवाह सम्मेलन, परिचय सम्मेलन, युवा सम्मेलन, प्रशिक्षण शिविर आदि कार्यों के लिए विशेष सुरक्षित कोष में सताईस लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

मद संख्या 07 - अध्यक्ष जी की अनुमति से अन्य मुद्दों पर विचार।

महामंत्री ने अध्यक्ष जी की अनुमति से निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किये।

1. शादी समारोह आदि में केटरिग के बर्तन आदि धोने के स्थान को अन्यत्र करने का प्रस्ताव रखा। विचार विमर्श पश्चात बर्तन धोने का स्थान वर्तमान में हलवाई के बर्तन धोने के स्थान पर रखने तथा हलवाई के बर्तन धोने के लिए किचन के पास बनवाने का निर्णय लिया गया। जिस पर अनुमानित व्यय दो लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गई।
2. महामंत्री ने जानकारी दी कि आश्रम में गत वर्षो में जो भी नव निर्माण हुआ है उसकी नगर परिषद से स्वीकृति नहीं है। हमने केवल नगर परिषद में पुराने भवन के जीर्णोद्धार नवीनीकरण की स्वीकृति हेतु पत्राचार किया था लेकिन नगर परिषद से कोई कार्यवाही नहीं हुई। नगर परिषद नें कुछ समय पूर्व अवैध निर्माण के संबंध में दो नोटिस ट्रस्ट

को दिए थे। विचार विमर्श पश्चात सर्वसम्मति से श्री मोहनराज उपाध्याय अध्यक्ष एवं श्री मिथिलेश गौतम ट्रस्टी अजमेर जिला को नगर परिषद से उक्त निर्माण की स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास करने हेतु अधिकृत किया गया। इस कार्य में भी जो राशि व्यय होगी इसकी स्वीकृति प्रदान की गई।

3. समाज की विधवा परित्यकता, असहाय व आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के संबंध में प्रबंधकारिणी समिति द्वारा गठित समिति की बैठक दिनांक 15.03.2026 को हुई जिसमे 14 आवेदन प्राप्त हुए। जिसकी समिति द्वारा विस्तृत जांच कर अनुशंषा की। जिनमे 05 सिलाई मशीन 03 फोटो स्टेट मशीन 03 बड़ी बनाने की मशीन तेल निकालने की मशीन की मांग आई है।

इस पर अध्यक्ष जी ने कहा कि इस के लिए राशि निश्चित कर दें। क्योंकि फोटोकॉपी मशीन एक लाख की भी आती है और 20000 की भी। वह महिला इसका उपयोग के लिए योग्य भी है या नहीं इस पर महामंत्री ने कहा कि क्षेत्र का ट्रस्टी/पदाधिकारी द्वारा अनुशंषा का आवेदन में प्रावधान है। यह जिम्मेदारी अनुशंषा करने वाले ट्रस्टी बन्धुओं की है।

श्री सोहनलाल जी जोशी वरि0 उपाध्यक्ष का सुझाव था कि कुछ राशि संबंधित महिलाओं से भी ली जाए।

श्री जवाहर जी का सुझाव था कि 15 से 20 हजार की राशि तय कर दी जाये। गुजरात राजकोट में हर प्रकार की मशीने मिलती है।

श्री के सी शर्मा जी भोपाल का मत था कि हमारा उद्देश्य यह है कि संबंधित महिला इससे अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। MP में महिलायें साड़ियों का रोजगार भी करती हैं।

विस्तृत विचार विमर्श पश्चात 15 से 25 हजार तक की राशि का साधन उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। पात्रता के लिये उक्त क्षेत्र के ट्रस्टी जिसने अनुशंषा की है कि जिम्मेदारी रहेगी।

4. कर्मचारियों के वार्षिक वेतन वृद्वि के संबंध में निर्णय लेना।

महामंत्री ने कहा कि कर्मचारियों की विभिन्न स्तरों से वेतन वृद्धि की मांग आ रही है। संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद जी ने कहा कि हमारे यहां केवल शादी समारोह के अलावा कितना कार्य है। भोजनालय का ठेका दिया वह निरस्त करना पड़ा यात्री भार बहुत कम है। श्री सोहनलाल जी का विचार था कि हर वर्ष वृद्वि करते हैं उसके अनुसार कर दें। अधिक बढाने की आवश्यकता नहीं है। अन्य संस्थाओं में कार्य भी अधिक है और गुणवत्ता भी है। अध्यक्ष जी ने कहा कि हमारे यहां कर्मचारी को यह भी मालूम नहीं होता है कि आश्रम में कौन आया व गया, सुपरविजन नहीं है। श्री जवाहर जी ने कहा कि जो भी पदाधिकारी यहां आए वो स्टाफ की मीटिंग लेंवे। श्री के. सी. शर्मा जी ने कहा कि आदमी तो हमें चाहिए।

महामंत्री ने कहा कि कर्मचारियों के कार्यों की जांच लगातार की जा रही है। वर्क डायरी मैंनेजर सहित सभी को दी गई है। जिसमें प्रतिदिन के कार्य का उल्लेख करना व इनकी जिम्मेदारी व कार्य के आदेश प्रत्येक कर्मचारी को लिखित में दे दिया गया है। महामंत्री द्वारा समय-समय पर जांच की जा रही है, सुधार हो रहा है कुछ समय लगेगा। सर्वसम्मति से पूर्व की भांति इस वर्ष भी वेतन वृद्धि करने का निर्णय लिया गया। अध्यक्ष, महामंत्री व कोषाध्यक्ष को अधिकृत किया गया कि समकक्ष संस्थानों के वेतन की जानकारी लेकर निर्णय लें।

5. महामंत्री ने AC मरम्मत व सर्विस तथा जनरेटर की सर्विस के लिये कोटेशन प्राप्त कर उनकी स्वीकृति की जानकारी दी जिसका सर्व सम्मति से अनुमोदन किया गया। लाइट का टेण्डर स्वीकृत हो गया व टेन्ट के संबंध में 22.03.2026 को नेगोशियेशन मिटिंग रखी गई हैं।

6. भोजनालय में नए फ्रिज एवं कारपेट हेतु एक लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गई।

7. महामंत्री ने कहा कि गर्मियों के मौसम में लाइट बंद होने की पुष्कर में आम समस्या हैं किसी यात्री ने आश्रम में AC कमरा लिया है और लाइट की एक दो घंटे के लिए कटौती

है तो यात्री की मांग रहती है कि मैंने AC कमरे का चार्ज दिया है AC नहीं तो लाइट व पंखे की तो व्यवस्था होनी चाहिए। विस्तृत विचार विमर्श पश्चात निर्णय लिया गया कि 10 या अधिक कमरे बुक हों तो जनरेटर चलाएं तथा किसी एक ब्लॉक में इनवर्टर से कनेक्ट करने या अन्य व्यवस्था के लिए श्री अशोक त्रिवेदी, श्री बालकृष्ण शर्मा, श्री ईश्वर जी लाइट कांट्रेक्टर से विचार कर कार्यवाही करेगें।

8. श्री जवाहर लाल जी ने सुझाव दिया कि महर्षि गौतम मंदिर पर महर्षि गौतम माता अहिल्या मंदिर लिखाना चाहिए इसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। संवाद पत्रिका नहीं पहुंचने की शिकायतें हैं। जमीन खरीदने की कार्यवाही की जाये।

9. श्री के.सी शर्मा जी भोपाल ने कहा कि यहां से पुण्यतिथि की सूचना फोन पर दी जा रही है बहुत अच्छा है मेरे सास ससुर को पुण्यतिथि की सूचना दी गई। महामंत्री ने जानकारी दी की सहायक मैनेजर की ड्यूटी निश्चित कर दी गई है कि प्रतिदिन बोर्ड पर पुण्यतिथि लिखने तथा एक दिन पूर्व संबंधित को फोन द्वारा सूचना देना।

श्री बालकृष्ण जी ने कहा कि नए कमरे बनाना और सोलर प्लांट लगवाना आदि पर निर्णय लेना चाहिए।

अध्यक्ष जी ने कहा कि नवनिर्माण पर तो नगर परिषद से स्वीकृति पश्चात निर्णय लेंगे। सोलर प्लांट तो अगर इनकम टैक्स की समस्या आती है तो इस माह में लगवाने की कार्यवाही कर सकते हैं नहीं तो अप्रैल में लगवाएंगे।

इस पर श्री हनुमान प्रसाद जी ने कहा कि गौतम हॉल पर हॉल बनवाकर सौलर लगाना तो उचित नहीं है गौतम हाल अभी भी बहुत कम शादी समारोह वाले काम में लेते हैं तो उसके ऊपर वाला हॉल कैसे आश्रम हित में उपयोगी होगा।

इस पर संजय त्रिपाठी मुंबई ने कहा कि गौतम हाल को AC करवा दे तो उपयोग होने लगेंगा।

श्री हनुमान प्रसाद जी का सुझाव था कि अगर हॉल बनाते है तो आगे के ब्लॉक में बनावाये इस पर अध्यक्ष जी ने कहा कि हॉल नही बनायेगे केवल सोलर लगवायेगे। यह स्वीकृत है।

श्री श्रवण लाल जी उपाध्याय जोधपुर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हम महर्षि गौतम की पूजा करते हैं लेकिन हम न्याय शास्त्र नहीं पढ़ते हैं। गौतम जी के न्याय सूत्र में 42 संस्कार तथा कई ग्रन्थ है। मेरा सुझाव है कि आश्रम में एक रैक की व्यवस्था हो जाए तो उसमें इस प्रकार के ग्रंथ रखे जा सकें। जो भी समाज बन्धु आए वह अध्ययन कर सके। युवाओं को संस्कारवान बनाने के लिए उपयोगी होंगे। व्यवस्था आश्रम ट्रस्ट कर दे तो ग्रंथों की व्यवस्था हम कर देंगे।

श्री सोहनलाल जी वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने कहा कि अभी इंदौर नगर सभा में गौतम जयंती का आयोजन किया वहां पर मुख्य अतिथि संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य को रखा गया। उन्होंने महर्षि गौतम के संबंध में कई प्रकार की जानकारी दी। जितनी हमें जानकारी नहीं थी। उन्होंने गौतम जी की कथा के संबंध में भी जानकारी दी।

श्री श्रवण जी ने कहा कि चूरू के पंडित जी का स्वर्गवास हो गया नहीं तो हमारा गौतम जी की कथा करवाने का लक्ष्य था अब प्रयास करेंगे।

श्री महेंद्र जी उपाध्याय जोधपुर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आश्रम की सार्थकता तभी है जब हम आम समाज को जोड़ें। स्वाध्याय, वेद संस्कार आदि शिक्षा के लिए कार्य करे। युवा पीढ़ी नशे की ओर अग्रसर हो रही है। मई-जून में शिविर आदि का आयोजन कर बच्चों को संस्कारवान बनाने के प्रयास होने चाहिये। ब्राह्मण समाज से कई क्रांतिकारी हुए हैं उनके बारे में जानकारी दी जाए। उनकी किसी हॉल में फोटो लगानी चाहिए।

अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि माता अहिल्या शिक्षा न्यास जोधपुर से प्रस्ताव आया था कि अहिल्या जयंती मनाई जाए। हमने अहिल्या जयंती आज मनाई। मैं जोधपुर के समाज बंधुओ का आभार व धन्यवाद प्रकट करता हूँ। शैक्षिणिक परिषद के लिए भूमि खरीद के लिए प्रयास चल रहे हैं लेकिन सभी ट्रस्टी जो निर्णय हुआ उसके अनुसार एक-एक सदस्य बनायेगे। मेधावी समाज के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा हेतु आर्थिक सहयोग का भी निर्णय

लिया है। हमारा 12 अप्रैल कों युवा सम्मेलन का आयोजन का भी प्रस्ताव है। आपने जो प्रस्ताव दिए हैं इनमें जो भी समाज व आश्रम हित में होगा उस पर कार्यवाही करेंगे। पहले आश्रम सक्षम नहीं था आज आश्रम सक्षम है। समाज हित के कार्य के लिए राशि व्यय करने की व्यवस्था की जायेगी। आप सभी का पुन: धन्यवाद एवं आभार।

संरक्षक श्री सीताराम जोशी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि मैं सन 1961 में महासभा से जुडा समाज सेवा का अवसर मिला। महासभा का प्रधानमंत्री रहा हरिद्वार में आश्रम खरीदने का कार्य किया। आप सब का सहयोग व प्रेम मिला उसके लिए आभार व धन्यवाद। हम सब मिलकर कार्य करेंगे तो आगे बढ़ते रहेंगे। पुन: सबका धन्यवाद।

8. ट्रस्टीजनों व परिजनों के देवलोकगमन पर श्रद्धासुमन अर्पित करना।

महामंत्री ने जानकारी दी कि गत बैठक पश्चात

1. श्री बद्रीनाथ जी उपाध्याय ट्रस्टी उड़ीसा (कटक) के पिता स्वर्गीय श्री नथमल जी उपाध्याय
2. वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सोहनलाल जी जोशी के भतीजे स्व. श्री सज्जन जोशी।
3. ट्रस्टी श्री राधेश्याम जी शर्मा के भतीजे स्व. श्री राकेश कुमार
4. हमारे वरिष्ठ ट्रस्टी बाड़मेर से श्री खेमाराम जी का देवलोकगमन हुआ है।

सभी ने दो मिनिट का मौन रख कर दिवंगत आत्माओं की शान्ति हेतु श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

''सत्य :- संसार का सर्वोच्च मूल्य''

सत्य संसार का सबसे बड़ा और अमर मूल्य है। झूठी जीभ स्वभाव से झूठ ही बोलती है, किंतु दृढ़ संकल्प, संयम और साहस के साँचे में ढलकर वही जीभ सत्य की साधिका बन जाती है। झूठ मनुष्य को भीतर से कुंठित करता है और समाज में अनेक प्रकार के भ्रम फैलाता है। वहीं सत्यवादी का प्रत्येक संवाद न्याय की तुला पर सबसे बड़ा और विश्वसनीय उपहार होता है। पितामह भीष्म युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते हैं :-

''सत्येन चाग्निर्दहति स्वर्ग: सत्ये प्रतिष्ठित:।
सत्यं यज्ञस्तपो वेदा: स्तोभा मन्त्रा: सरस्वती॥''

(महाभारत, शांतिपर्व 199.68)

अर्थात् सत्य के कारण ही अग्नि जलती-प्रज्वलित होती है, स्वर्ग सत्य पर ही प्रतिष्ठित है। यज्ञ जैसी महान संस्था, समस्त तपस्याएँ, श्रेष्ठ स्तोत्र, महान मंत्र और वाग्देवी सरस्वती-ये सभी सत्य के साक्षात् स्वरूप हैं। प्राचीन काल में सत्य के इस मूल्य को इतना महत्व दिया जाता था कि राजा हरिश्चंद्र की कथा गाँव-गाँव में नाटकों के माध्यम से दिखाई जाती थी। प्रजा से लेकर शासक तक सभी से अपेक्षा की जाती थी कि वे सत्यवादी, सत्यप्रेमी, सत्यानुशील और सत्यमार्गी बनें। सत्य को देवता मानकर सत्यनारायण की कथा-पूजा भी की जाती थी। सत्य को जीवन का आधार, धर्म का मूल और मोक्ष का द्वार माना जाता था।किंतु आज स्थिति विपरीत है। भारतीय संस्कृति और आत्मिक मूल्यों में सबसे अधिक क्षरण यदि किसी का हुआ है, तो वह सत्य का ही हुआ है। झूठ को अब मूल्यवान, चतुराईपूर्ण और सफलता की सीढ़ी मान लिया गया है। राजनीति, व्यापार, सामाजिक संबंध, मीडिया-हर क्षेत्र में सत्य की जगह छल, कपट और माया ने ले ली है।फिर भी सत्य की ज्योति कभी पूरी तरह बुझ नहीं सकती। क्योंकि सत्य ही वह शक्ति है जो अग्नि को जलाती है, स्वर्ग को आधार देती है और सरस्वती को वाणी प्रदान करती है। आज के इस झूठ के युग में हमें पुन: सत्य की साधना करनी होगी-संकल्प से, संयम से और साहस से। क्योंकि सत्य ही वह एकमात्र मूल्य है जो मनुष्य को कुंठा से मुक्त करता है, न्याय की स्थापना करता है और अंतत: अमरत्व प्रदान करता है।

''सत्यमेव जयते''-सत्य की ही सदा जीत होती है।

- भगवद्गीता समूह से साभार

महामृत्युंजय मंत्र

महामृत्युंजय मंत्र हिंदू धर्म के सबसे शक्तिशाली, पवित्र और प्राचीन मंत्रों में से एक है। यह भगवान शिव (मृत्युंजय - मृत्यु को जीतने वाले) को समर्पित है। यह मंत्र ऋग्वेद के सातवें मंडल के 59वें सूक्त (ऋग्वेद 7.59.12) और यजुर्वेद में वर्णित है। इसे 'रुद्र मंत्र' या 'त्र्यम्बकम मंत्र' भी कहा जाता है।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

मंत्र का विस्तारित अर्थ (शब्दार्थ)

ॐ : ईश्वर तत्व का बोधक, सर्वोच्च ध्वनि।

त्र्यम्बकं : तीन आँखों वाले (भगवान शिव), जो तीनों लोकों को देखने वाले हैं।

यजामहे : हम पूजा करते हैं, सम्मान करते हैं, उपासना करते हैं।

सुगन्धिं : सुगंधित, जो हमारे जीवन में भक्ति और प्रसन्नता की सुगंध फैलाते हैं।

पुष्टिवर्धनम् : जो सभी जीवों का पोषण करते हैं, पोषण और समृद्धि को बढ़ाने वाले।

उर्वारुकमिव : जिस प्रकार खरबूजा (या खीरा) लता के बंधन से आसानी से पककर मुक्त हो जाता है।

बन्धनान् : बंधन से, संसार के मोह-माया के बंधनों से।

मृत्योर्मुक्षीय : मृत्यु के भय से, अकाल मृत्यु से हमें मुक्ति दिलाएं।

मामृतात् : हमें अमरता (अमृत) की ओर ले जाएं, मोक्ष प्रदान करें।

भावार्थ : हम त्रिनेत्रधारी भगवान शिव की पूजा करते हैं, जो सुगंधित हैं और संसार के सभी जीवों का पोषण करते हैं। जैसे ककड़ी (खरबूजा) अपनी लता के बंधन से मुक्त हो जाती है, वैसे ही प्रभु हमें मृत्यु के भय और सांसारिक बंधनों से मुक्त करें और अमरत्व प्रदान करें।

मंत्र की उत्पत्ति की कथा

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, ऋषि मृकण्डु के पुत्र मार्कंडेय की आयु मात्र 16 वर्ष ही निश्चित थी। जब यमराज उनके प्राण लेने आए, तब मार्कंडेय ने भगवान शिव के शिवलिंग को अपनी बांहों में जकड़ लिया और इस मंत्र का जाप करने लगे। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और यमराज को वापस जाने का आदेश दिया, साथ ही मार्कंडेय को अमरता का वरदान दिया। तब से इस मंत्र को मृत्यु पर विजय पाने वाला माना जाता है।

महामृत्युंजय मंत्र के लाभ और महत्व

अकाल मृत्यु से रक्षा : यह मंत्र अकाल मृत्यु के भय को खत्म करता है और जीवन की रक्षा करता है।

आरोग्य प्राप्ति (बीमारियों का नाश) : यह असाध्य रोगों के इलाज में, मानसिक और शारीरिक कष्टों को दूर करने में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

ग्रह दोष शांति : यह मंत्र नवग्रहों के दोष, विशेषकर शनि और राहु-केतु से संबंधित बाधाओं को दूर करने में सहायक है।

समृद्धि और ज्ञान : इसके नियमित जाप से जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और लंबी आयु की प्राप्ति होती है।

जाप की विधि और सावधानी

समय : सुबह का समय (ब्रह्म मुहूर्त) इसके जाप के लिए सबसे उत्तम है।

स्थान : शांत स्थान, शिव मंदिर या घर के मंदिर में बैठकर जाप करें।

रुद्राक्ष माला : मंत्र जाप के लिए रुद्राक्ष की माला (108 दाने) का उपयोग करें।

दिशा : पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए।

सावधानी : मंत्र का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। जब आप इस मंत्र का जाप करें, तो मन में श्रद्धा और विश्वास रखें।

■■■

भगवद्गीता में सुख-दु:ख का विवेचन

हम सभी 'सुख' चाहते हैं ताकि हम सुखी रह सकें। कोई भी व्यक्ति दु:खी रहना नहीं चाहता तथापि 'दु:ख' हमारा पिंड (साथ) नहीं छोड़ता।

भगवद्गीता में सर्वप्रथम 'सुख' शब्द का उल्लेख अर्जुन ने किया है। कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में अपने सारथी श्री कृष्ण को अर्जुन कहता है कि मुझे सुख की आकांक्षा नहीं है। अर्जुन तो यहां तक कह जाता है -

''न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।''

अर्थात् हे श्रीकृष्ण ! मैं न तो विजय चाहता हूं, न राज्य और न ही सुखों को चाहता हूं।

यहां यह समझने वाली बात है कि यदि विजय, राज्य एवं सुख की आकांक्षा अर्जुन को नहीं थी, तो उसे पांडवों सहित पुन: 12 वर्षों के वनवास पर मृगछाला पहनकर गमन कर जाना चाहिए था। लेकिन वह तो सात अक्षौहिणी सेना लेकर कुरुक्षेत्र के मैदान में संघर्ष करने के लिए डटा हुआ है। किसलिए ? विजय, राज्य एवं सुख के लिए ही।

अर्जुन की कथनी और करनी में काफी अंतर दिख रहा है। वास्तव में अर्जुन के भीतर सुख की आकांक्षा / कामना है। अर्जुन का बचपन एवं तारुण्य जीवन राजमहल के प्रांगण में ही बीता है। सुख का भोग अर्जुन कर चुका है। अरण्य / जंगल में रहकर अथवा किसी आश्रम में रहकर सुख नहीं पाया जा सकता - यह अर्जुन की मान्यता है।

सुख सशर्त है। सुख तभी होगा, जब अपना राज्य होगा। राज्य भी सशर्त है। युद्ध में जब विजय मिलेगी, तभी राज्य प्राप्त होगा। विजय, राज्य एवं सुख - तीनों सशर्त हैं तथा सभी एक दूसरे पर आश्रित हैं।

इसके बाद तो अर्जुन और भी अद्भुत बात कह देता है -

''स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिन: स्याम माधव''

अर्थात् - हे माधव ! अपने ही स्वजनों को मार कर हम कैसे सुखी होंगे ? यह सुनकर हम सभी को बड़ा आश्चर्य लग रहा होगा कि स्वजनों अर्थात् धृतराष्ट्र पक्ष के सैनिकों की हत्या से अर्जुन के सुखी होने का क्या संबंध है ? इसका तात्पर्य है कि धृतराष्ट्र पक्ष जीवित रहे, तभी अर्जुन सुखी रहेगा। और हम सभी यह जानते हैं कि दुर्योधन सहित धृतराष्ट्र-पक्ष के लोग तो जीवितावस्था में ही हस्तिनापुर के राजमहल में सुख भोग रहे हैं, केवल अर्जुन सहित पांडव-पक्ष सुख नहीं दु:ख भोग रहा है। दुर्योधन तो सुई के अग्रभाग के बराबर भी भूमि पांडव पक्ष को देना नहीं चाहता। इसीलिए तो संघर्ष की नौबत आई है।

शोकाकुल अर्जुन एकदम उल्टी बात कह रहा है। विषाद की अवस्था में अर्जुन इसका कारण भी बताता है कि राज्य और सुख के लोभ में हम सभी स्वजनों की हत्या करने के लिए उद्यत हो गए हैं। इसका तात्पर्य यह है कि यदि हम सुख नहीं चाहें, तो हमें मारने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। तब तो अर्जुन को युद्ध करने के लिए कुरुक्षेत्र में संग्राम के लिए आना ही नहीं चाहिए था और आने के पश्चात् जब वह यह वक्तव्य दे रहा है, तब वक्तव्य देने के पश्चात तो उसे युद्ध भूमि छोड़ देनी चाहिए थी। लेकिन अर्जुन ऐसा भी नहीं कर रहा है। तब भगवान श्री कृष्ण को सुख के साथ दु:ख पर भी अपने विचार प्रकट करने पडे अन्यथा युद्धक्षेत्र में सुख पर वक्तव्य रखने का कोई औचित्य ही नहीं था।

- भगवद्गीता धार्मिक केन्द्र से साभार

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके पास जीवन में एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो लेकिन जो आदमी उसके स्वागत के लिए तैयार नहीं होता उसके पास से वह उल्टे पांव लौट जाता है।

राम क्यों राम हुए

शिव तो आदिदेव हैं, उनकी पूजा समझ में आती है। कृष्ण ने अनगिनत चमत्कार दिखाए, गीताज्ञान दिया, उनकी आराधना ठीक लगती है। पर राम, दशरथनन्दन श्रीराम में ऐसा क्या है कि राम का नाम ही ईश्वर का पर्याय बन गया, कि लोग वेदों में वर्णित देवताओं को भूल राम-राम करने लगे। उन्होंने तो बाकी देवताओं की तरह कभी चमत्कार नहीं दिखाया, न हलाहल विषपान किया, न मुख से ज्ञान का प्रसाद वितरित किया। फिर, फिर उन्होंने ऐसा क्या किया जो राम 'राम' हुए।

उत्तर है उनके कर्म!

उच्च वर्ग में, बल्कि सत्ता, धन, अधिकार के सर्वोत्तम शिखर के घर जन्मे उस महामानव ने किसी भी मानव के गुणों का सर्वोत्तम सोपान छू लिया था।

सोचिए कि एक राजा का बेटा, जिसके एक आदेश पर सेनाएँ सज्ज हो जाती हों, जिसके कहने पर अनगिनत वीर मरने-मारने, प्राण त्यागने को उद्यत हो जाते हों, वह एक मामूली अंगरक्षक के रूप में, एक सुरक्षाकर्मी के रूप में अपनी ही प्रजा के एक वैज्ञानिक श्री विश्वामित्र की रक्षा हेतु चल पड़ता है।

जिसने धर्म का पाठ पढ़ा हो, जिसका धर्म ही हो कि गौ, स्त्री और ब्राह्मण की रक्षा करनी है, वह बिना संकोच के देखते ही ताड़का नामक स्त्री का वध कर देता है। वह अपराधी को देख हिचक नहीं जाता कि यह तो स्त्री है, और स्त्री का वध नहीं किया जाना चाहिए। उसका न्याय लिंगभेद नहीं करता।

वह सद्पुरुषों का रक्षण करता है, खलपुरुषों का वध करता है और तिसपर भी उसकी मुस्कान बनी रहती है। किसी के सम्मुख सिर झुकाते समय उसे संकोच नहीं होता, और किसी का सिर उतारने पर वह अहंकार से ग्रसित नहीं होता। वह चलता है तो धरती डोलती नहीं, बल्कि खिल उठती है। वह परमवीर है, पर उसे देख पुरजनों को भय नहीं अभय की प्राप्ति होती है। दुर्दमनीय धनुष को तोड़कर भी वह विनीत बना रहता है। क्रोधित दुर्दम्य परशुराम के सम्मुख भी वह विचलित नहीं होता।

जितना सहज होकर वह पिता की आज्ञा से सिंहासन स्वीकारता है, उतनी ही सहजता से त्याग भी देता है। पिता की आज्ञा, माता की इच्छा और भाई के कल्याण के लिए वह अपना परंपरागत अधिकार छोड़ वल्कल वस्त्र पहन वनों में चला जाता है।

राजमहलों का निवासी जंगलों में, वनवासियों के साथ घुलमिल कर रह रहा है। उनके जैसे वस्त्र, उनके जैसा भोजन, उनके जैसा श्रम।

प्रियतमा के अपहरण पर उसका रूदन। उस युग में जब राजपुरुषों के लिए बहुविवाह मान्य था, स्वयं उसके पिता की कई स्त्रियाँ थी, वह एक स्त्री के लिए पेड़ों से लिपट कर रो रहा है। नदी और पर्वतों से पागलों की भाँति पूछ रहा है। सामान्य मनुष्य की भाँति, जब दुख अत्यधिक हो तो क्रोध बन जाता है, वह सब तहस-नहस करने पर उतारू हो जाता है, पर अंततः स्वयं को नियंत्रित कर लेता है और अपनी स्त्री को खोजने के लिए धरती-पाताल एक कर देता है।

संसाधनहीन वनवासी शून्य से सेना का निर्माण करता है। अधर्मी को दण्डित करना ही धर्म है, अतः अधर्मी का छुपकर वध करते समय परंपरागत धर्म उसका बाधक नहीं बनता।

संसार में जो पहले कभी न हुआ था, वह कर दिखाता है। समुद्र को बाँध लेता है। वह विनय की प्रतिमूर्ति है जो हाथ जोड़कर विनती करता है, परन्तु अवहेलना पर वही हाथ शस्त्र उठाकर दण्ड देने की क्षमता भी रखते हैं। वह

सहिष्णु है, पर उसकी सहिष्णुता दुर्बलता के कारण नहीं है। वह जानता है कि वही विजयी होगा, फिर भी वह हाथ जोड़ना जानता है।

सामने शत्रु है, ऐसा शत्रु जिससे संसार भय खाता है। जिसने देवताओं तक पर विजय प्राप्त की हुई है, वह उससे भिड़ जाता है। हिंसा अंतिम उपाय है, यह संदेश अवश्य देता है, पर जब प्रतिपक्ष को अहिंसा स्वीकार नहीं तो परम हिंसक होने में क्षण नहीं लगाता।

वह, जो अपने राज्य से निर्वासित है, अपने राज्य से भी अधिक सम्पन्न राज्य जीतकर भी उसे तृण की भाँति त्याग देता है और उस स्त्री को, जो उसके शत्रु के घर वर्ष भर कैदी रही हो, गले लगा लेता है।

जिसका चरित्र इतना पावन है कि उसके महाबलशाली भाई उसके अनुचर बने रहते हैं। वे भाई, जो अपने बड़े भाई के लिए कोई भी त्याग करने को प्रस्तुत हैं, जो बड़े भाई के हित के लिए माता-पिता, गुरु और स्वयं बड़े भाई की आज्ञा मानने से भी इंकार कर देते हैं।

जिसका मन इतना निर्मल है कि हर वर्ग उसका अपना है। जिसका चरित्र इतना उज्ज्वल है कि तपस्यारत ऋषि भी उसके दर्शन को सौभाग्य मानते हैं। जिसका प्रेम इतना पावन है कि वनवासिनी बुढ़िया अपना मान उसे अपना जूठा खिला देती है। जिसका क्रोध इतना भीषण है कि समुद्र भी थर-थर कांपता है।

जो वन में वनवासी होकर भी राजा की भाँति रक्षण करता है, जो सिंहासन पर बैठकर भी वनवासियों की भाँति प्रकृति से जुड़ा रहता है, जो मानव होकर भी मानवेतर सामर्थ्य रखता है, मानवीय गुणों की पराकाष्ठा को सतत प्राप्त है, जो सच्चिदानन्द है, ऐसा महामानव है, ऐसा आदिपुरुष है कि आदिदेव महादेव भी उसके भक्त बन जाते हैं, ऐसे धृतिमान् महाबाहु को साक्षात ईश्वर न मानें तो क्या मानें?

श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।

- भगवद्गीता धार्मिक केन्द्र से साभार

भारत भरत भरद्वाज का है

भारत भरत भारद्वाज का है, जिसमें है भ्रातृत्व प्रबल।
कोई भाई बने न चारा, रहना होगा संभल संभल।।

उदासीनता लोलुपता ने, सभ्यता को तहजीब बना डाला।
गंगा यमुना के पानी में, अपनों का रक्त बहा डाला।।

स्व को त्यज कर होता संगम, मैल वहीं धुल होता मेल।
अपना मैल चढ़ा औरों पर, कुत्सित खेल रहे हैं खेल।।

पंच गव्य और पंचामृत से, अब शुद्धि करनी होगी।
दग्ध दंश सब हटा-मिटा कर, भारत भू उज्जवल करनी ही होगी।।

खल-बल को जो सम्बल देते, उनका अस्तित्व मिटाना होगा।
शास्त्र शस्त्र के प्रबल वेग से , अब आगे बढ़ जाना होगा।।

- भवानी शंकर शर्मा
सवाईमाधोपुर

एक प्रेरक कहानी

पड़ोसी

खट खट खट खट...कौन है, पता नहीं कौन है इतनी रात गए, बडबडाते हुए सावित्री देवी ने दरवाजे के बीच बने झरोखे से झांककर देखा। अरे रमा तुम इतनी रात गए जानती भी हो दो बज रहे हैं। क्या है ? आंटीजी वो...वो बाबूजी की तबियत खराब हो रही है। उन्हें बड़े अस्पताल लेकर जाना होगा, आंटीजी अंकलजी से कहिए ना वो अपनी गाडी से उन्हें... बात बीच में काटते हुए सावित्री देवी बोली... बेटा वो इनकी भी तबियत खराब है। बडी मुश्किल से दवाई देकर सुलाया है। ऊपर से गाड़ी भी ठीक नहीं है। तो तुम चौक पर चली जाओ वहां कोई ऑटो टैक्सी मिल जाएगी, क्या चौक पर ? रमा की आँखें भीगी हुई थी रात दो बजे चौक पर, मां बाबूजी ने कभी आठ बजे के बाद घर से नहीं निकलने दिया। कारण अक्सर मां बाबूजी उसे समझाते रहते थे बेटा ये वक्त असामाजिक तत्वों के बाहर घूमते हुए शिकार करने का ज्यादा होता है। लेकिन आज... आज तो मुझे जाना ही होगा मां को ढाढस बंधाकर आई हूँ। मुझे बेटी नहीं बेटा मानते हैं मेरे मां बाबूजी तो मैं कैसे पीछे हट सकती हूँ। लेकिन मन में अक्सर अकेली लडकियों के साथ होती वारदातों की खबरें रमा के मन की आशंकाओं को और बढा रही थी। लेकिन वो हिम्मत करते हुए अपनी गली से बाहर सड़क की ओर जाने लगी... अरे रुको... कौन हो तुम... पीछे से आवाज सुनाई दी... रमा ने घबराकर पीछे की ओर देखा तो गली के नुक्कड़ पर महीने भर पहले रहने आए नये पड़ोसी जो कि रिक्शा चलाते हैं को खड़ा पाया... अरे तुम तो हमारी गली के दीनानाथ भैया की बिटिया हो ना... कहां जा रही हो इतनी रात गए... काका वो... बाबूजी की तबीयत खराब है अस्पताल लेकर जाना है कोई सवारी ढूंढने... क्या... दीनानाथ भैया की तबीयत खराब है? बिटिया तुम घर चलो वापसी... कहकर वह जंजीर से बंधे अपने रिक्शा को खोलने लगे... रमा तुरंत घर पहुंची। बाबूजी को सहारा देकर उठाने की कोशिश कर ही रही थी कि रिक्शे वाले काका अंदर आ गए... आओ दीनानाथ भैया... सहारा देते हुए दीनानाथ जी को पकड़ते हुए रिक्शे वाले ने कहा... अरे बिटिया.... भाभीजी.... कुछ नहीं है सब ठीक है अभी डाक्टर के पास पहुंच जाएंगे, पिछली सीट पर तीनों को बिठाकर रिक्शा पर तेजी से पैडल मारकर खींचने लगा।

अस्पताल पहुंचकर रमा के साथ साथ डाक्टरों के आगे पीछे भागते हुए दीनानाथ जी को भर्ती कराया, देखिए थोडा बीपी बढा हुआ था। डाक्टर ने उन्हें दवाओं सहित थोड़ा आराम करने के लिए कहा। बैड के पास बैठी रमा को शाम की वो तस्वीरे आँखों के आगे नजर आ रही थी जब बगलवाली सावित्री आंटी अंकलजी के साथ खिलखिलाकर गाड़ी से उतरी थी तब ना तो गाड़ी खराब थी और ना अंकलजी की तबीयत। बस देखिए ये इंजेक्शन मंगवा लीजिए डाक्टर ने एक पर्ची रमा की ओर बढाते हुए कहा। यहां लाइए डाक्टर साहब कहकर रिक्शा वाले ने पर्ची पकड़ ली। तुम मम्मी पापा के साथ रहो हम अभी लेकर आए बिटिया और वह बाहर की ओर तेजी से निकल गया। रमा एकटक उसकी ओर देखती रही। एक छोटा सा चद्दर वाले मकान में रहने वाला रिक्शा वाला। गली में सभी के घर दो तीन मंजिला थे। सभी के घरों में मार्बल पत्थरों की सजावट थी तो किसी के यहां टाइल्स की। बस वही एक घर अजीब सा लगता था झोंपड़ी नुमा, सीमेंट की चद्दरों से ढका हुआ, कुछ ही देर में... लो डाक्टर साहब अचानक रिक्शे वाले की आवाज ने उसकी तंद्रा भंग की। डाक्टर ने इंजेक्शन लगाया और आराम करने के लिए कहकर चला गया। सुबह छ बजे तक डाक्टर ने चार बार बीपी चैक किया। तकरीबन सभी समय सुधार था सो डाक्टरों ने दीनानाथ जी को घर जाने की अनुमति दे दी, वापसी भी रिक्शे पर लेकर रिक्शा वाला बड़ी सावधानी से घर तक छोड़ कर जैसे ही चलने को हुआ रमा ने बटुआ निकालकर पांच सौ का नोट उसकी ओर बढाया, लीजिए काका... ये क्या कर रही हो बिटिया... हम इन सब कामों के पैसे नहीं लेते। मतलब ये तो आपका काम है ना काका लीजिए, बिटिया हमारे परिवार के जीवन यापन के लिए हम सुबह से शाम तक उस ऊपर वाले की दया से मेहनत करके कमा लेते हैं। ज्यादा का लालच नहीं, वो इंतजाम किए देता है हमारे पेट का और वैसे भी हम एक गली में रहते हैं। ऐसे हम और आप पड़ोसी हुए और वो पड़ोसी किस काम का जो ऐसी स्थिति में भी साथ ना दे, कहकर रमा के सिर पर हाथ रखकर वो चलने लगा। रमा भीगी हुई आँखें पोंछते हुए ऊपर वाले की ओर देखकर बोली आप जैसे भगवान रूपी पड़ोसी ईश्वर हर घर के पास रहे....।

■■■

पौराणिक कथा

हनुमान पुत्र मकरध्वज

पवनपुत्र हनुमान बाल-ब्रह्मचारी थे। लेकिन मकरध्वज को उनका पुत्र कहा जाता है। यह कथा उसी मकरध्वज की है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, लंका जलाते समय आग की तपिश के कारण हनुमानजी को बहुत पसीना आ रहा था। इसलिए लंका दहन के बाद जब उन्होंने अपनी पूँछ में लगी आग को बुझाने के लिए समुद्र में छलाँग लगाई तो उनके शरीर से पसीने के एक बड़ी-सी बूँद समुद्र में गिर पड़ी। उस समय एक बड़ी मछली ने भोजन समझ वह बूँद निगल ली। उसके उदर में जाकर वह बूँद एक शरीर में बदल गई।

एक दिन पाताल के असुरराज अहिरावण के सेवकों ने उस मछली को पकड़ लिया। जब वे उसका पेट चीर रहे थे तो उसमें से वानर की आकृति का एक मनुष्य निकला। वे उसे अहिरावण के पास ले गए। अहिरावण ने उसे पाताल पुरी का रक्षक नियुक्त कर दिया। यही वानर हनुमान पुत्र 'मकरध्वज' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जब राम-रावण युद्ध हो रहा था, तब रावण की आज्ञानुसार अहिरावण राम-लक्ष्मण का अपहरण कर उन्हें पाताल पुरी ले गया। उनके अपहरण से वानर सेना भयभीत व शोकाकुल हो गयी। लेकिन विभीषण ने यह भेद हनुमान के समक्ष प्रकट कर दिया। तब राम-लक्ष्मण की सहायता के लिए हनुमानजी पाताल पुरी पहुँचे।

जब उन्होंने पाताल के द्वार पर एक वानर को देखा तो वे आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने मकरध्वज से उसका परिचय पूछा। मकरध्वज अपना परिचय देते हुआ बोला- ''मैं हनुमान पुत्र मकरध्वज हूं और पातालपुरी का द्वारपाल हूँ।'' मकरध्वज की बात सुनकर हनुमान क्रोधित होकर बोले- ''यह तुम क्या कह रहे हो? दुष्ट! मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ। फिर भला तुम मेरे पुत्र कैसे हो सकते हो?'' हनुमान का परिचय पाते ही मकरध्वज उनके चरणों में गिर गया और उन्हें प्रणाम कर अपनी उत्पत्ति की कथा सुनाई। हनुमानजी ने भी मान लिया कि वह उनका ही पुत्र है।

लेकिन यह कहकर कि वे अभी अपने श्रीराम और लक्ष्मण को लेने आए हैं, जैसे ही द्वार की ओर बढ़े वैसे ही मकरध्वज उनका मार्ग रोकते हुए बोला- ''पिताश्री! यह सत्य है कि मैं आपका पुत्र हूँ लेकिन अभी मैं अपने स्वामी की सेवा में हूँ। इसलिए आप अन्दर नहीं जा सकते।''

हनुमान ने मकरध्वज को अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास किया, किंतु वह द्वार से नहीं हटा। तब दोनों में घोर युद्ध शुरु हो गया। देखते-ही-देखते हनुमानजी उसे अपनी पूँछ में बाँधकर पाताल में प्रवेश कर गए। हनुमान सीधे देवी मंदिर में पहुँचे जहाँ अहिरावण राम-लक्ष्मण की बलि देने वाला था। हनुमानजी को देखकर चामुंडा देवी पाताल लोक से प्रस्थान कर गईं। तब हनुमानजी देवी-रूप धारण करके वहाँ स्थापित हो गए।

कुछ देर के बाद अहिरावण वहाँ आया और पूजा अर्चना करके जैसे ही उसने राम-लक्ष्मण की बलि देने के लिए तलवार उठाई, वैसे ही भयंकर गर्जन करते हुए हनुमानजी प्रकट हो गए और उसी तलवार से अहिरावण का वध कर दिया। उन्होंने राम-लक्ष्मण को बंधन मुक्त किया। तब श्रीराम ने पूछा- ''हनुमान! तुम्हारी पूँछ में यह कौन बँधा है? बिल्कुल तुम्हारे समान ही लग रहा है। इसे खोल दो।'' हनुमान ने मकरध्वज का परिचय देकर उसे बंधन मुक्त कर दिया। मकरध्वज ने श्रीराम के समक्ष सिर झुका लिया। तब श्रीराम ने मकरध्वज का राज्याभिषेक कर उसे पाताल का राजा घोषित कर दिया और कहा कि भविष्य में वह अपने पिता के समान दूसरों की सेवा करे।

यह सुनकर मकरध्वज ने तीनों को प्रणाम किया। तीनों उसे आशीर्वाद देकर वहाँ से प्रस्थान कर गए। इस प्रकार मकरध्वज हनुमान पुत्र कहलाए।

■■■

सोलहवीं पुतली सत्यवती की कहानी

राजा विक्रमादित्य के शासनकाल में उज्जैन नगरी का यश चारों ओर फैला हुआ था। एक से बढ़कर एक विद्वान उनके दरबार की शोभा बढ़ाते थे और उनकी नौ जानकारों की एक समिति थी जो हर विषय पर राजा को परामर्श देते थे तथा राजा उनके परामर्श के अनुसार ही राजकाज सम्बन्धी निर्णय लिया करते थे।

एक बार ऐश्वर्य पर बहस छिड़ी, तो मृत्युलोक की भी बात चली। राजा को जब पता चला कि पाताल लोक के राजा शेषनाग का ऐश्वर्य देखने लायक है और उनके लोक में हर तरह की सुख-सुविधाएं मौजूद हैं। चूंकि वे भगवान विष्णु के खास सेवकों में से एक हैं, इसलिए उनका स्थान देवताओं के समकक्ष है। उनके दर्शन से मनुष्य का जीवन धन्य हो जाता है।

विक्रमादित्य ने सशरीर पाताल लोक जाकर उनसे भेंट करने की ठान ली। उन्होंने दोनों बेतालों का स्मरण किया। जब वे उपस्थित हुए, तो उन्होंने उनसे पाताल लोक ले चलने को कहा। बेताल उन्हें जब पाताल लोक लाए, तो उन्होंने पाताल लोक के बारे में दी गई सारी जानकारी सही पाई। सारा लोक साफ-सुथरा तथा सुनियोजित था। हीरे-जवाहरात से पूरा लोक जगमगा रहा था। जब शेषनाग को खबर मिली कि मृत्युलोक से कोई सशरीर आया है तो वे उनसे मिले।

राजा विक्रमादित्य ने पूरे आदर तथा नम्रता से उन्हें अपने आने का प्रयोजन बताया तथा अपना परिचय दिया। उनके व्यवहार से शेषनाग इतने प्रसन्न हो गए कि उन्होंने चलते वक्त उन्हें चार चमत्कारी रत्न उपहार में दिए। पहले रत्न से मुंहमांगा धन प्राप्त किया जा सकता था। दूसरा रत्न मांगने पर हर तरह के वस्त्र तथा आभूषण दे सकता था। तीसरे रत्न से हर तरह के रथ, अश्व तथा पालकी की प्राप्ति हो सकती थी। चौथा रत्न धर्म-कार्य तथा यश की प्राप्ति करवा सकता था। काली द्वारा प्रदत्त दोनों बेताल स्मरण करने पर उपस्थित हुए तथा विक्रम को उनके नगर की सीमा पर पहुंचाकर अदृश्य हो गए।

चारों रत्न लेकर अपने नगर में प्रविष्ट हुए ही थे कि उनका अभिवादन एक परिचित ब्राह्मण ने किया। उन्होंने राजा से उनकी पाताल लोक की यात्रा तथा रत्न प्राप्त करने की बात जानकर कहा कि राजा की हर उपलब्धि में उनकी प्रजा की सहभागिता है। राजा विक्रमादित्य ने उसका अभिप्राय समझकर उससे अपनी इच्छा से एक रत्न ले लेने को कहा। ब्राह्मण असमंजस में पड़ गया और बोला कि अपने परिवार के हर सदस्य से विमर्श करने के बाद ही कोई फैसला करेगा। जब वह घर पहुंचा और अपनी पत्नी, बेटे तथा बेटी को सारी बात बताई, तो तीनों ने तीन अलग तरह के रत्नों में अपनी रुचि जताई। ब्राह्मण फिर भी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सका और इसी मानसिक दशा में राजा के पास पहुंच गया।

विक्रम ने हंसकर उसे चारों के चारों रत्न उपहार में दे दिए।

मिथ्याभिमान

मिथ्याभिमान आत्मघाती प्रवृत्ति है। हम विचार करें तो देखेंगे कि बुढ़ापा व्यक्ति से रूप छीन लेता है। निराशा व्यक्ति से धीरज छीन लेती है। मृत्यु प्राणों का हरण कर लेती है। निंदा से धर्म का पतन होता है। क्रोध से लक्ष्मी नहीं ठहरती। कुसंग से सदाचार नहीं रहता, परंतु अभिमान कुछ भी नहीं छोड़ता। इसीलिए व्यक्ति को मिथ्याभिमान छोड़ देना चाहिए। अन्यथा मिथ्याभिमान व्यक्ति को कहीं का भी नहीं छोड़ता।

कहने का तात्पर्य है कि अभिमान की जड़ अज्ञान है, जबकि विनम्रता ज्ञान की पहचान है। जो व्यक्ति अभिमान त्याग देता है, वही जीवन में सच्ची उन्नति और आनंद का अधिकारी बनता है।

पंचतंत्र से प्रेरक कहानी

दुष्ट सर्प

एक जंगल में एक बहुत पुराना बरगद का पेड था। उस पेड पर घोंसला बनाकर एक कौआ-कव्वी का जोडा रहता था। उसी पेड के खोखले तने में कहीं से आकर एक दुष्ट सर्प रहने लगा। हर वर्ष मौसम आने पर कव्वी घोंसले में अंडे देती और दुष्ट सर्प मौका पाकर उनके घोंसले में जाकर अंडे खा जाता। एक बार जब कौआ व कव्वी जल्दी भोजन पाकर शीघ्र ही लौट आए तो उन्होंने उस दुष्ट सर्प को अपने घोंसले में रखे अंडों पर झपट्ते देखा।

अंडे खाकर सर्प चला गया कौए ने कव्वी को ढाढस बंधाया ''प्रिये, हिम्मत रखो। अब हमें शत्रु का पता चल गया है। कुछ उपाय भी सोच लेंगे।''

कौए ने काफी सोचा विचारा और पहले वाले घोंसले को छोड उससे काफी ऊपर टहनी पर घोंसला बनाया और कव्वी से कहा ''यहां हमारे अंडे सुरक्षित रहेंगे। हमारा घोंसला पेड की चोटी के किनारे निकट है और ऊपर आसमान में चील मंडराती रहती है। चील सांप की बैरी है। दुष्ट सर्प यहां तक आने का साहस नहीं कर पाएगा।''

कौवे की बात मानकर कव्वी ने नए घोंसले में अंडे दिए और वे सुरक्षित रहे तथा उनमें से बच्चे भी निकल आए। उधर सर्प उनका घोंसला खाली देखकर यह समझा कि उसके डर से कौआ कव्वी शायद वहां से चले गए हैं पर दुष्ट सर्प टोह लेता रहता था। उसने देखा कि कौआ-कव्वी उसी पेड से उडते हैं और लौटते भी वहीं हैं। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि उन्होंने नया घोंसला उसी पेड पर ऊपर बना रखा है। एक दिन सर्प खोह से निकला और उसने कौओं का नया घोंसला खोज लिया।

घोंसले में कौआ दंपती के तीन नवजात शिशु थे। दुष्ट सर्प उन्हें एक-एक करके घपाघप निगल गया और अपने खोह में लौटकर डकारें लेने लगा। कौआ व कव्वी लौटे तो घोंसला खाली पाकर सन्न रह गए। घोंसले में हुई टूट-फूट व नन्हें कौओं के कोमल पंख बिखरे देखकर वह सारा माजरा समझ गए। कव्वी की छाती तो दुख से फटने लगी। कव्वी बिलख उठी ''तो क्या हर वर्ष मेरे बच्चे सांप का भोजन बनते रहेंगे?''

कौआ बोला ''नहीं! यह माना कि हमारे सामने विकट समस्या है पर यहां से भागना ही उसका हल नहीं है। विपत्ति के समय ही मित्र काम आते हैं। हमें लोमडी मित्र से सलाह लेनी चाहिए।''

दोनों तुरंत ही लोमडी के पास गए। लोमडी ने अपने मित्रों की दुख भरी कहानी सुनी। उसने कौआ तथा कव्वी के आंसू पोंछे। लोमडी ने काफी सोचने के बाद कहा ''मित्रो! तुम्हें वह पेड छोडकर जाने की जरुरत नहीं है। मेरे दिमाग में एक तरकीब आ रही है, जिससे उस दुष्टसर्प से छुटकारा पाया जा सकता है।''

लोमडी ने अपने चतुर दिमाग में आई तरकीब बताई। लोमडी की तरकीब सुनकर कौआ-कव्वी खुशी से उछल पडे। उन्होंने लोमडी को धन्यवाद दिया और अपने घर लौट आए। अगले ही दिन योजना अमल में लानी थी। उसी वन में बहुत बडा सरोवर था। उसमें कमल और नरगिस के फूल खिले रहते थे। हर मंगलवार को उस प्रदेश की राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ वहां जल-क्रीडा करने आती थी। उनके साथ अंगरक्षक तथा सैनिक भी आते थे।

इस बार राजकुमारी आई और सरोवर में स्नान करने जल में उतरी तो योजना के अनुसार कौआ उडता हुआ वहां आया। उसने सरोवर तट पर राजकुमारी तथा उसकी सहेलियों द्वारा उतारकर रखे गए कपडों व आभूषणों पर नजर डाली। कपडे से सबसे ऊपर था राजकुमारी का प्रिय हीरे व मोतियों का विलक्षण हार।

कौए ने राजकुमारी तथा सहेलियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए 'कांव-कांव' का शोर मचाया। जब सबकी नजर उसकी ओर घूमी तो कौआ राजकुमारी का हार चोंच में दबाकर ऊपर उड गया। सभी सहेलियां चीखी ''देखो, देखो! वह राजकुमारी का हार उठाकर ले जा रहा हैं।''

सैनिकों ने ऊपर देखा तो सचमुच एक कौआ हार लेकर धीरे-धीरे उडता जा रहा था। सैनिक उसी दिशा में दौडने लगे। कौआ सैनिकों को अपने पीछे लगाकर धीरे-धीरे उडता हुआ उसी पेड की ओर ले आया। जब सैनिक कुछ ही दूर रह गए तो कौए ने राजकुमारी का हार इस प्रकार गिराया कि वह सांप वाले खोह के भीतर जा गिरा।

शेष पृष्ठ 32 पर.....

देश प्रदेश से प्राप्त समाचार .....

1. अजमेर में श्री महर्षि गौतम जयंती समारोह का आयोजन

श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण प्रगतिशील संस्था एवं नवयुवक मंडल के तत्वावधान में समाज के नवनिर्माणाधीन श्री महर्षि गौतम आश्रम एवं शैक्षणिक संस्थान प्रगतिशीलनगर, खंडेलवाल भवन के पीछे, लोहागल, अजमेर में महर्षि गौतम जयन्ती का आयोजन विशाल स्तर पर समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाज सेवी श्री शिवराज चाष्टा रहे तथा अध्यक्षता अनिल कुमार जी जोशी ने की, विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी दर्शना शर्मा, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता डॉ अरविंद शर्मा गिरधर, जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव गोविंद उपाध्याय उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अजमेर शहर और आसपास के गांव से सैकड़ों की संख्या में आए समाज के सभी परिवारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ प्रात: 8.15 बजे हवन पूजन से तथा 9.15 बजे ध्वजारोहण से किया गया। कार्यक्रम में खेल महोत्सव का भी आयोजन किया गया, छोटे बच्चों के लिए बाउंसी, गन शूटिंग, डब्बा गिराओ सहित कई खेल स्टॉल लगाई गई। समाज के पधारे हुए महिला पुरुष और बच्चों के अलग-अलग समूहों ने गिल्ली-डंडा, सितोलिया, मारदड़ी आदि पारंपरिक खेलों में भाग लिया। कार्यक्रम में समाज के मेधावी विद्यार्थियों का जिसमें दसवीं एवं 12वीं में 75% से अधिक अंक लाने वाले व अन्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मध्य श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण प्रगतिशील संस्था की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह रखा गया, जिसमें अध्यक्ष हनुमान प्रसाद शर्मा, उपाध्यक्ष रमेश जोशी व अशोक त्रिवेदी, सचिव सर्वेश्वर तिवारी, सह सचिव परमेश्वर उपाध्याय, कोषाध्यक्ष संदीप जोशी, संगठन सचिव यशवंत राज उपाध्याय व कुशल उपाध्याय, प्रचार मंत्री जितेंद्र जोशी व पंकज शर्मा, अंकेक्षक सुशील चौबे ने चुनाव अधिकारी श्री हरिदत्त जोशी की उपस्थिति में शपथ ग्रहण की।

इसके बाद नवयुवक मंडल की नव निर्वाचित कार्यकारिणी को अध्यक्ष महोदय हनुमान प्रसाद जी शर्मा ने शपथ दिलाई, जिसमें अध्यक्ष धर्मेंद्र जोशी, उपाध्यक्ष नितिन जोशी और आनंद जोशी, सचिव मुकेश उपाध्याय, कोषाध्यक्ष दीपक शर्मा, सह कोषाध्यक्ष विवेक शर्मा, संगठन मंत्री यश जोशी, प्रचार मंत्री नवल जोशी, मीडिया प्रभारी अक्षय त्रिवेदी ,विशेष कार्यकारिणी सदस्य के रूप में चंद्र प्रकाश तिवारी, मनोज शंकर शर्मा, विपिन जोशी चुने गए।

इसी के साथ - क्षेत्रीय प्रतिनिधि मनीष शर्मा, अक्षत तिवारी, दिव्यांशु शर्मा, मनमोहन जोशी पीयूष जोशी अंकित जोशी, दीपक शर्मा चुने गए।

संस्था के संगठन सचिव श्री यशवंत राज उपाध्याय को अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभा में अजमेर जिला अध्यक्ष पद पर मनोनीत होने पर मंच से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पधारे हुए सभी समाज के लोगों व निमंत्रित महानुभावों के लिए भोजन-प्रसादी का आयोजन भी रखा गया।

मुख्य अतिथि श्री शिवराज चाष्टा ने अपने सम्बोधन में वेदों में महर्षि गौतम द्वारा द्रष्टव्य ऋचाओं के बारे में बताया कि चारों वेदों में महर्षि गौतम का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी महिलाओ पुरुषों से आग्रहपूर्वक निवेदन किया कि हमें महर्षि गौतम द्वारा द्रष्टव्य वैदिक मंत्र -

''भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम देवा:
भद्रं पश्येमाक्षभिर यजत्रा:।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभि:
व्यशेमहि देवहितं यदायु:।।''

को हमारी प्रात:कालीन प्रार्थना में सम्मिलित कर उपासना करनी चाहिए।

अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जी ने संस्था की आगामी योजनाओं को विस्तार से बताया। सचिव सर्वेश्वर तिवारी ने

गत तीन वर्षों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें विकास कार्यों की विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही कोषाध्यक्ष श्री संदीप जोशी के माध्यम से आय और व्यय का लेखा जोखा भी प्रस्तुत किया। आज समाज के निर्माणाधीन भवन के निर्माण हेतु समाज के कई दानदाताओं ने खुलकर आर्थिक सहयोग भी दिया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरी टीम पिछले दो महीनों से तन मन धन से लगी हुई थी, उसी का परिणाम है कि कार्यक्रम सफलतम रहा।

पधारे हुए सभी समाज बंधुओं ने मुक्त कंठ से संस्था के द्वारा की गई सभी व्यवस्थाओं की प्रशंसा की, और आश्वासन दिया कि संस्था द्वारा किए जाने वाले समाज उपयोगी कार्यों में पूरा समाज साथ है। सचिव ने अजमेर गुर्जर गौड़ ब्राह्मण प्रगतिशील संस्था व नवयुवक मंडल के सभी साथियों की ओर से सभी का हार्दिक आभार प्रकट किया।

-प्रेषक : सर्वेश्वर तिवारी-सचिव

श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण प्रगतिशील संस्था (रजि) अजमेर

2. श्री पुष्कर गौतमाश्रम में महर्षि गौतम जयंती मनाई।

श्री पुष्कर गौतम आश्रम में महर्षि गौतम जयंती के पर्व पर महर्षि गौतम व माता अहिल्या की प्रतिमा का वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक पूजा अर्चना हवन व आरती की गई। महर्षि गौतम व माता अहिल्या की प्रतिमा का श्रृंगार किया गया तथा प्रसाद वितरण किया गया। इस अवसर पर गौतम आश्रम ट्रस्ट समिति महामंत्री वेंकटेश्वर प्रसाद शर्मा, अंकेक्षक बालकृष्ण शर्मा, सत्यदेव शर्मा, अरविंद शर्मा, एडवोकेट चंद्रशेखर जोशी, महेश शर्मा, आशुतोष शर्मा, किशन गौतम, गोविंद शर्मा, श्याम शर्मा, तरुण गौतम सहित समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। महामंत्री वेंकटेश्वर प्रसाद ने सभी को नववर्ष व महर्षि गौतम जयंती की शुभकामनाएं प्रेषित की।

प्रेषक : वेंकटेश्वर प्रसाद शर्मा-सचिव

श्री पुष्कर गौतमाश्रम, पुष्कर

3. माँ अहिल्या जयंती समारोह

दिनांक 21.03.26 को श्री पुष्कर गौतमाश्रम में प्रथम माँ अहिल्या जयंती का शुभारंभ किया गया। प्रात: 7.15 बजे से माता अहिल्या एवं महर्षि गौतम जी का अभिषेक किया गया। तत्पश्चात हवन किया गया। अभिषेक हवन में ट्रस्ट अध्यक्ष मोहनराज उपाध्याय, महामंत्री वेंकटेश्वर प्रसाद शर्मा, कोषाध्यक्ष भंवरलाल जोशी, उपमंत्री अशोक त्रिवेदी संरक्षक हनुमान प्रसाद शर्मा, अंकेक्षक बालकृष्ण शर्मा, किस्तूर चन्द गील, प्रबन्धकारिणी सदस्य परमेश्वर उपाध्याय, राजेन्द्र शर्मा कोटा, राजेन्द्र शर्मा अजमेर, अनिल कुमार जोशी, जवाहरलाल उपाध्याय तथा स्थानीय समाज बंधुओं व मातृशक्ति ने बहुत ही हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। आरती के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम में माँ अहिल्या शिक्षा न्यास जोधपुर के सदस्य विशेष रूप से उपस्थित हुए। माँ अहिल्या शिक्षा न्यास जोधपुर द्वारा आश्रम में कार्यरत महिला कर्मचारियों को साड़ी राशि भेंट कर सम्मानित किया गया, तथा ट्रस्ट अध्यक्ष व महामंत्री का साफा माल्यार्पण से सम्मान किया। ट्रस्ट समिति की और से माँ अहिल्या शिक्षा न्यास जोधपुर के पदाधिकारी का अध्यक्ष जी ने सम्मान किया। ट्रस्ट समिति द्वारा सामूहिक भोजन प्रसाद का आयोजन किया गया।

4. इन्दौर में महर्षि गौतम जयन्ती मनाई तथा वरिष्ठ समाजसेवी सीताराम जोशी का महर्षि गौतम गौरव सम्मान से अभिनंदन

गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज नगर सभा इन्दौर द्वारा न्याय शास्त्र के प्रणेता पूज्य अक्षपाद महर्षि गौतम की जयन्ती हर्षोल्लास से मनाई गई। इस मौके पर बैंडबाजों के साथ

विशाल शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में आगे घुड़सवार, एक बग्घी में महर्षि गौतम एवं माँ अहल्या का वेषधारण कर बालक-बालिका बैठी हुई थी। दूसरी बग्घी में कार्यक्रम के अतिथि बिराजमान रहे। मुख्य अतिथि सीताराम जोशी (पाली) का एरोड्रम रोड़ स्थित गौतम आश्रम पहुँचने पर नगर सभा के अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास, प्रधानमंत्री कमलेश तिवारी, समाजसेवी सतीश व्यास आदि ने साफा एवं पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया। आपके साथ पुष्कर गौतम आश्रम के उपाध्यक्ष सोहनलाल जोशी, महासभा के उपाध्यक्ष गोरधन जोशी, महासभा के महासचिव वरिष्ठ पत्रकार नरेश चन्द्र शर्मा का भी साफा एवं माला पहनाकर स्वागत किया गया। सभी अतिथियों ने महर्षि गौतम की प्रतिमा की पूजा कर माल्यार्पण किया। सीताराम जोशी अपने वाहन में बैठ कर शोभायात्रा में शामिल हुए। शोभायात्रा हंसदास मठ पर पहुंच कर धर्मसभा में बदल गई। सभा में इंदौर गुर्जरगौड़ ब्राह्मण नगर सभा की ओर से गुर्जरगौड़ समाज के वरिष्ठ समाजसेवी, शिक्षाविद सीताराम जोशी पाली को महर्षि गौतम गौरव सम्मान प्रदान कर अभिनंदन किया गया। महर्षि गौतम शिक्षण न्यास इंदौर के अध्यक्ष अरविन्द तिवारी ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। इसके बाद वरिष्ठ समाज सेवी के.सी.शर्मा, नगर सभा के अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास, महामंत्री कमलेश तिवारी सहित अन्य पदाधिकारियों ने सीता राम जोशी को शॉल ओढ़ाकर, बड़ी पुष्प माला पहना कर, अष्टधातु से बनी हुई महर्षि गौतम की प्रतिमा एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मान किया।

नगर सभा की ओर से अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास आदि ने डॉ. विनायक पांडे का भी शॉल, माला व महर्षि गौतम की प्रतिमा भेंट कर सम्मान किया।

सभा में मुख्य अतिथि डॉ. विनायक पाण्डे, वरिष्ठ समाजसेवी सीताराम जोशी, इंदौर नगर सभा के पूर्व अध्यक्ष, संरक्षक के. सी. शर्मा, विष्णु प्रकाश व्यास, महासभा उपाध्यक्ष सतीश व्यास, सोहन लाल जोशी पाली, गोरधन जोशी पाली, वरिष्ठ पत्रकार नरेश शर्मा उदयपुर, इंदौर में सर्व ब्राह्मण समाज के प्रतिनिधियों सहित नगर सभा की अध्यक्ष, प्रधानमंत्री एवं मुख्य पदाधिकारी भी मंचासीन थे। अन्त में समाजजनों का स्नेह भोज भी आयोजित किया गया। नवरात्रि पर्व के कारण जिन लोगों के उपवास रहे, उनके लिए फलाहार (सेगारी भोजन) भी रखा गया।

उल्लेखनीय है कि वयोवृद्ध समाजसेवी सीताराम जोशी अखिल भारत वर्षीय गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभा के चार दशक पहले प्रधानमंत्री सहित वरिष्ठ उपाध्यक्ष, वर्तमान संरक्षक, हरिद्वार गौतम आश्रम ट्रस्ट के संस्थापक मंत्री, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, संरक्षक, पुष्कर गौतम आश्रम ट्रस्ट के विभिन्न पदों सहित अध्यक्ष रहे हैं। 1961 से समाज सेवा में समर्पित सीताराम जोशी ने अपने कार्यकाल में गुर्जरगौड़ समाज के उत्थान, एकता, सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने, शिक्षा के प्रसार के लिए देशभर में भ्रमण किया। आपने पाली गुर्जरगौड़ समाज के भवन निर्माण सहित हरिद्वार में गौतम आश्रम के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाई। सीताराम जोशी व उनका परिवार पाली में श्रीकृष्णा कॉलेज, बीएड कॉलेज, हायर सेकेंडरी स्कूल, पॉलिटेक्निक कॉलेज सहित जैसलमेर आदि में भी विभिन्न शिक्षण संस्थानों का संचालन कर देश की भावी पीढ़ी में शिक्षा के प्रसार में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उनको इंदौर समाज की ओर से महर्षि गौतम गौरव सम्मान प्रदान किए जाने पर देशभर से सामाजिक कार्यकर्ताओं ने फोन कर, सोशल मीडिया पर बधाई भेज कर शुभकामनाएं दी हैं।

प्रेषक : कमलेश शर्मा, महामंत्री

पृष्ठ 29 का शेष.....

सैनिक दौडकर खोह के पास पहुंचे। उनके सरदार ने खोह के भीतर झांका। उसने वहां हार और उसके पास में ही एक काले सर्प को कुडंली मारे देखा। वह चिल्लाया ''पीछे हटो! अंदर एक नाग है।'' सरदार ने खोह के भीतर भाला मारा। सर्प घायल हुआ और फुफकारता हुआ बाहर निकला। जैसे ही वह बाहर आया, सैनिकों ने भालों से उसके टुकडे-टुकडे कर डाले।

सीखः बुद्धि का प्रयोग करके हर संकट का हल निकाला जा सकता है।

SSP EVENTS

WEDDING ON WHEELS
Endless Romance of Royal Wedding

PALACE ON WHEELS
A Week In Wonderland

Gold Award for Best Artist Management Company by BITA @ Baku - Azerbaijan.

SSP Events, South India's leading wedding planner and artist management agency, In association with the iconic **Palace on Wheels**, proudly presents **Wedding on Wheels**—a unique luxury event experience like no other!

Create cherished memories with **Wedding on Wheels**, offering exclusive and unforgettable celebrations aboard the majestic Palace on Wheels. Reserve your extraordinary event today!

For More Details

SSP EVENTS

Mo: 93472 97988 | 83411 27988
Mail: ssp.event@yahoo.com
Instagram: sspeventshyd | events.on.wheels
Web Page: eventsonwheels.in

जवाहरलाल उपाध्याय
संगठन मंत्री, महासभा
ट्रस्टी गौतमाश्रम पुष्कर
ट्रस्टी गौतमाश्रम हरिद्वार
उपाध्यक्ष गौतमाश्रम त्र्यंबकेश्वर
ट्रस्टी अ.भा.म.गौ.शै.पा. न्यास

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

J L Builders

JDH
HARDWARE

जेडी हार्डवेयर

रवि उपाध्याय

गौरव उपाध्याय

गर्वित उपाध्याय

जवाहरलाल उपाध्याय

'गौरव' 76बी, मानसरोवर, शंकर नगर, जोधपुर- 342008 (राज.)

मो. 94141-30222, 96108-30222, 94147-53555, 96601-78191

श्रीमान् _____

_____

_____

प्राप्त नहीं करने पर निम्न पते पर वापस भेजें :

SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM
Pushkar-Ajmer (Raj.)

मुद्रक : श्री आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर फो. 9414336820